- 19th Year
- Issue: 201
- 23.11.2025 (SUNDAY)
- ROURKELA
- R.N.I. No. ORIHIN/2006/18978
- (Pages-6)
- Price:2.00

e-paper-www.thekalingasamachar.com

दैनिक
कलिंग समाचार
The kalingasamachar

प्रकाशक एवं संपादक : प्रकाश कुमार धल

Published From ODISHA, JHARKHAND & CHHATTISHGARH

जी-20 में भारत की दमदार दस्तक : पीएम मोदी का आतंकवाद-ड्रग्स के गठजोड़ पर कड़ा प्रहार, स्वास्थ्य को भी दी प्राथमिकता

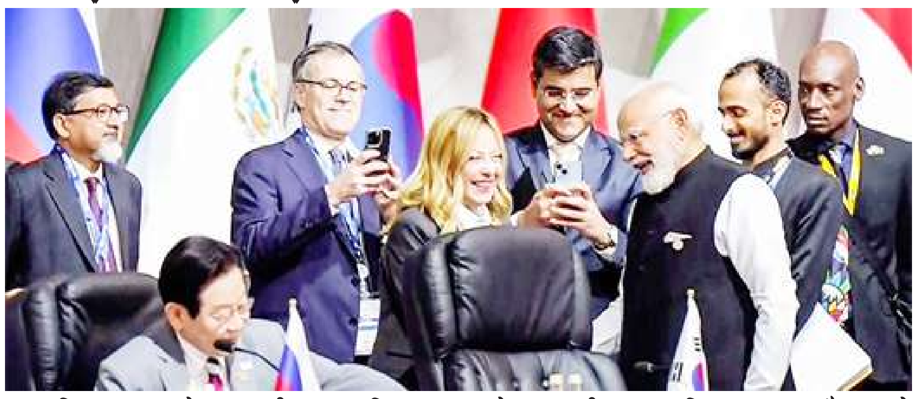

नयी दिल्ली २२/११ (संवाददाता): प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में जी-20 शिखर सज़्मेलन में भारत के सज़्यतागत मूल्यों के अनुरूप वैश्विक विकास को नया रूप देने के उद्देश्य से कई पहलों का प्रस्ताव रखा।

'समावेशी और सतत आर्थिक विकास, जिसमें कोई पीछे न छूटे' विषय पर आयोजित सत्र को संबोधित करते हुए, प्रधानमंत्री मोदी ने वैश्विक विकास मानदंडों पर गहन पुनर्विचार का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जी-20 ने लंबे समय से वैश्विक विज़ और विकास को आकार दिया है, लेकिन प्रचलित मॉडलों ने बड़ी आबादी को संसाधनों से वंचित किया है और प्रकृति के अति-दोहन को बढ़ावा दिया है। ये चुनौतियाँ अफ्रीका में तीव्र रूप से महसूस की जा रही हैं।

मोदी ने कहा कि अफ्रीका द्वारा पहली बार जी-20 शिखर सज़्मेलन की मेज़बानी के साथ, अब हमारे लिए अपने विकास मानदंडों पर पुनर्विचार करने और समावेशी एवं सतत विकास पर ध्यान केंद्रित करने का सही समय है। भारत के सज़्यतागत मूल्य, विशेष रूप से एकात्म मानववाद का सिद्धांत, आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट किया, दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में जी-20 शिखर सज़्मेलन के पहले सत्र को संबोधित किया, जिसमें समावेशी और सतत विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया। अफ्रीका द्वारा पहली बार जी-20 शिखर सज़्मेलन की मेज़बानी के साथ, अब हमारे लिए अपने विकास मानदंडों पर पुनर्विचार करने और समावेशी एवं सतत विकास पर ध्यान केंद्रित करने का सही समय है। भारत के सज़्यतागत मूल्य, विशेषकर एकात्म मानववाद का सिद्धांत आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करता है।

मोदी ने कहा कि मैंने सर्वांगीण विकास के हमारे सपने को साकार करने के लिए कुछ कार्ययोजनाएँ प्रस्तावित कीं। उनमें से पहला है जी-20 वैश्विक पारंपरिक ज्ञान भंडार का निर्माण। इस संबंध में भारत का इतिहास समृद्ध है। इससे हमें अपने सामूहिक ज्ञान को बेहतर स्वास्थ्य और कल्याण की दिशा में आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी।

अफ्रीका की प्रगति वैश्विक प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत हमेशा अफ्रीका के साथ एकजुटता में खड़ा रहा है। मुझे इस बात पर गर्व है कि भारत की त्न20 अध्यक्षता के दौरान ही अफ्रीकी संघ त्न20 का स्थायी सदस्य बना। इसी भावना को आगे बढ़ाते हुए, भारत त्न20-अफ्रीका कौशल गुणक पहल का प्रस्ताव रखता है। हमारा सामूहिक लक्ष्य अगले दशक के भीतर अफ्रीका में 10 लाख प्रमाणित प्रशिक्षक तैयार करना होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि भारत एक त्न20 वैश्विक स्वास्थ्य सेवा प्रतिक्रिया दल के गठन का प्रस्ताव रखता है।

स्वास्थ्य संबंधी आपात स्थितियों और प्राकृतिक आपदाओं के समय जब हम मिलकर काम करते हैं, तो हमारी स्थिति और भी मज़बूत होती है। हमारा प्रयास त्न20 के अन्य देशों के प्रशिक्षित चिकित्सा विशेषज्ञों की टीमें बनाना होना चाहिए जो किसी भी आपात स्थिति में तुरंत तैनाती के लिए तैयार रहें। मादक पदार्थों की तस्करी, खासकर फेंटेनाइल जैसे बेहद खतरनाक पदार्थों के प्रसार की चुनौती से निपटने के लिए, भारत ने मादक पदार्थों-आतंकवाद के गठजोड़ का मुकाबला करने के लिए जी-20 पहल का प्रस्ताव रखा है। आइए, हम इस बदहाल मादक पदार्थ-आतंकवादी अर्थव्यवस्था को कमज़ोर करें!

राष्टपति मुर्मू ने की श्री सत्य साईं ट्रस्ट की प्रशंसा-शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण विकास में निभाई अहम भूमिका

पुट्टपर्थी २२/११ (संवाददाता): राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शनिवार को पुट्टपर्थी स्थित प्रशांति निलयम में श्री सत्य साईं बाबा के शताज़्दी समारोह के उपलक्ष्य में आयोजित एक विशेष सत्र में भाग लिया। सभा को संबोधित करते हुए, राष्ट्रपति मुर्मू ने भारत के संतों और ऋषियों की चिरस्थायी विरासत पर प्रकाश डाला, जिन्होंने अपने वचनों और कार्यों से समाज का मार्गदर्शन किया है। उन्होंने कहा कि श्री सत्य साईं बाबा ऐसे दिग्गजों में एक विशेष स्थान रखते हैं, और उन्होंने समाज के कल्याण के लिए निरंतर कार्य किया। उन्होंने उनके इस दर्शन पर ज़ोर देते हुए कि मानवता की सेवा ही ईश्वर की सेवा है, कहा कि बाबा ने अध्यात्म को निस्वार्थ सेवा और व्यक्तिगत परिवर्तन से जोड़ा, जिससे लाखों लोगों को सेवा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिली। राष्ट्रपति मुर्मू ने शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में श्री सत्य साईं सेंट्रल ट्रस्ट की पहल की सराहना की। उन्होंने कहा कि ट्रस्ट उच्च-गुणवज़ा वाली नि:शुल्क शिक्षा प्रदान करता है, जिसमें शैक्षणिक उत्कृष्टता को चरित्र निर्माण के साथ जोड़ा जाता है, और ज़रूरतमंद समुदायों को नि:शुल्क चिकित्सा सेवा भी प्रदान करता है। ग्रामीण विकास में बाबा के योगदान पर प्रकाश डालते हुए, उन्होंने कहा कि उनके विजन के कारण इस क्षेत्र के हज़ारों सूखा प्रभावित गाँवों में पेयजल की व्यवस्था हुई। राष्ट्पति ने बाबा की शिक्षाओं की सार्वभौमिक और शाश्वत प्रकृति पर ज़ोर दिया और उनके संदेशों सबसे प्रेम करो, सबकी सेवा करो और सदैव मदद करो, कभी किसी को चोट न पहुँचाओ का हवाला दिया। उन्होंने विस्तार से बताया कि बाबा का मानना था कि विश्व ही हमारी पाठशाला है और पाँच मानवीय मूल्य - सत्य, नैतिकता, शांति, प्रेम और अहिंसा - पाठ्यक्रम का निर्माण करते हैं, जो विभिन्न संस्कृतियों और पीढ़ियों को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। राष्ट्रपति मुर्मू ने %राष्ट्र प्रथम% की भावना के अनुरूप, राष्ट्र निर्माण में आध्यात्मिक संगठनों की भूमिका पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि धर्मार्थ संगठन, गैर सरकारी संगठन, निजी क्षेत्र और नागरिक राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

कांग्रेस नेताओं ने दुर्भावनापूर्ण कारणों से सरदार पटेल के योगदान की अनदेखी की-नड्डा

नयी दिल्ली २२/११ (संवाददाता): भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष जे पी नड्डा ने शनिवार को देश को एकजुट करने में सरदार वल्लभभाई पटेल के योगदान की सराहना की और आरोप लगाया कि कांग्रेस की ''साजिश'' के कारण भारत के पहले उप-प्रधानमंत्री को आजादी के बाद चार दशकों तक इतिहास में वह सज़्मान नहीं मिल सका जिसके वह ''सच्चे हकदार'' थे। नड्डा ने कहा कि अगर किसी ने सरदार पटेल को देश के इतिहास में ''सही और उचित स्थान'' दिया है, तो वह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हैं। भाजपा अध्यक्ष ने पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में ''ऐट 150 यूनिटी मार्च' को हरी झंडी दिखाने के बाद एक कार्यक्रम में ये टिप्पणियां कीं। पटेल भारत के पहले गृह मंत्री भी रहे। नड्डा ने कहा, ''अंग्रेज चाहते थे कि भारत कमजोर और विभाजित रहे। हमें उस मानसिकता से भी मुक्ति मिली। हमारा देश 562 रियासतों में बंटा हुआ था। हम विदेशी शासन के अधीन रहे ज़्योंकि हम विभाजित थे। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल ने दो साल के भीतर इन रियासतों को एकजुट कर एक राष्ट्र बनाया। केंद्रीय मंत्री नड्डा ने कहा, ''उन्होंने एक विभाजित भूमि को एक मजबूत और एकजुट भारत - 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' में बदल दिया। लेकिन दुर्भाग्य से इतिहास और देश में उन्हें जो सज़्मान मिलना चाहिए था, उसकी कांग्रेस के शासनकाल में कांग्रेस नेताओं ने दुर्भावनापूर्ण और स्वार्थी कारणों से अनदेखी की।भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि आजादी के बाद चार दशकों (1950 से 1991) तक कांग्रेस सज़ा में रही, फिर भी तब के किसी भी प्रधानमंत्री ने सरदार पटेल को भारत रत्न नहीं दिया। नड्डा ने आरोप लगाया, ''यह सुनिश्चित करने के लिए षड्यंत्र रचे गए कि इतिहास में उन्हें वह सज़्मान न मिले जिसके वह हकदार थे।''

मणिपुर में 18 एकड़ में अफीम की अवैध खेती नष्ट की गई

इंफाल २२/११ (संवाददाता): सुरक्षा बलों ने मणिपुर के चुराचांदपुर और तेंगनौपाल जिलों में करीब 18 एकड़ इलाके में की गई अफीम की अवैध खेती को नष्ट कर दिया। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि जिला पुलिस, असम राइफल्स, वन विभाग और मादक पदार्थ एवं सीमा मामलों (एनएबी) की एक संयुक्त टीम ने शुक्रवार को चुराचांदपुर के सांगईकोट पुलिस थाना क्षेत्र के डी. लहंगजोल गांव में एक अभियान चलाया। उन्होंने बताया कि लगभग 18 एकड़ में की गई अफीम की खेती अभियान के दौरान नष्ट कर दी गई जिससे इससे लगभग 40 किलोग्राम अफीम की पैदावार का अनुमान था।

कांग्रेस का वोट चोरी के खिलाफ हल्लाबोल, दिल्ली में विशाल रैली की तैयारी

नयी दिल्ली २२/११ (संवाददाता):कांग्रेस दिसंबर के दूसरे हफ़्ते में दिल्ली के रामलीला मैदान में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के ख़िलाफ़ एक रैली आयोजित करेगी। यह रैली %वोट-चोरी% के आरोपों के ख़िलाफ़ देशव्यापी हस्ताक्षर अभियान के पूरा होने के बाद हो रही है, जिसके तहत पार्टी ने देश भर से पाँच करोड़ हस्ताक्षर एकत्र किए थे। आज यहां उन बारह राज्यों के प्रदेश कांग्रेस अध्यक्षों, कांग्रेस विधायक दल के नेताओं, महासचिवों, प्रभारियों, सचिवों और वरिष्ठ नेताओं की एक बैठक हुई, जहाँ एसआईआर प्रक्रिया चल रही है। इसकी अध्यक्षता कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने की।

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और महासचिव (संगठन) केसी वेणुगोपाल भी उपस्थित थे। खड़गे ने बाद में कहा कि कांग्रेस पार्टी मतदाता सूची की अखंडता की रक्षा के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग का एसआईआर प्रक्रिया के दौरान आचरण बेहद निराशाजनक रहा है। खड़गे ने कहा, उसे तुरंत यह दिखाना होगा कि वह भाजपा के साये में काम नहीं कर रहा है और उसे भारत की जनता के प्रति अपनी संवैधानिक शपथ और निष्ठा याद है, न कि किसी सज़ारूढ़ दल के प्रति। कांग्रेस नेता वी. हनुमंत राव ने कहा कि 65 लाख वोट चुराए गए, लेकिन चुनाव आयोग ने इसकी जाँच शुरू नहीं की है। इसी वजह से देश भर की राजनीतिक पार्टियाँ रामलीला मैदान में जनसभा करने के लिए इकट्ठा हो रही हैं। राहुल गाँधी वहाँ देशवासियों को यह बताने जाएँगे कि हमारे देश में कितनी बेईमानी हो रही है और बाबासाहेब अंबेडकर का कितना अपमान हो रहा है, ज़्योंकि उनके दिए अधिकारों का पालन नहीं किया जा रहा है... लोगों को संविधान के उल्लंघन के ख़िलाफ़ एकजुट होना चाहिए... वोट चोर, गद्दी चोर% पर होने वाली सभा को सफल बनाना चाहिए... इस एनडीए सरकार को अपनी आँखें खोलनी चाहिए। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने पलटवार करते हुए कहा कि एसआईआर एक बहाना है। परिवार को हार से बचाने के लिए चुनाव आयोग को निशाना बनाया जा रहा है। यह वही कांग्रेस है जिसने महाराष्ट्र में एसआईआर का समर्थन किया था और इसे तुरंत लागू करने की माँग की थी, फिर भी बंगाल और बिहार में यह अलग रुख अपनाती है... फ़िलहाल, वे एसआईआर का विरोध कर रहे हैं।

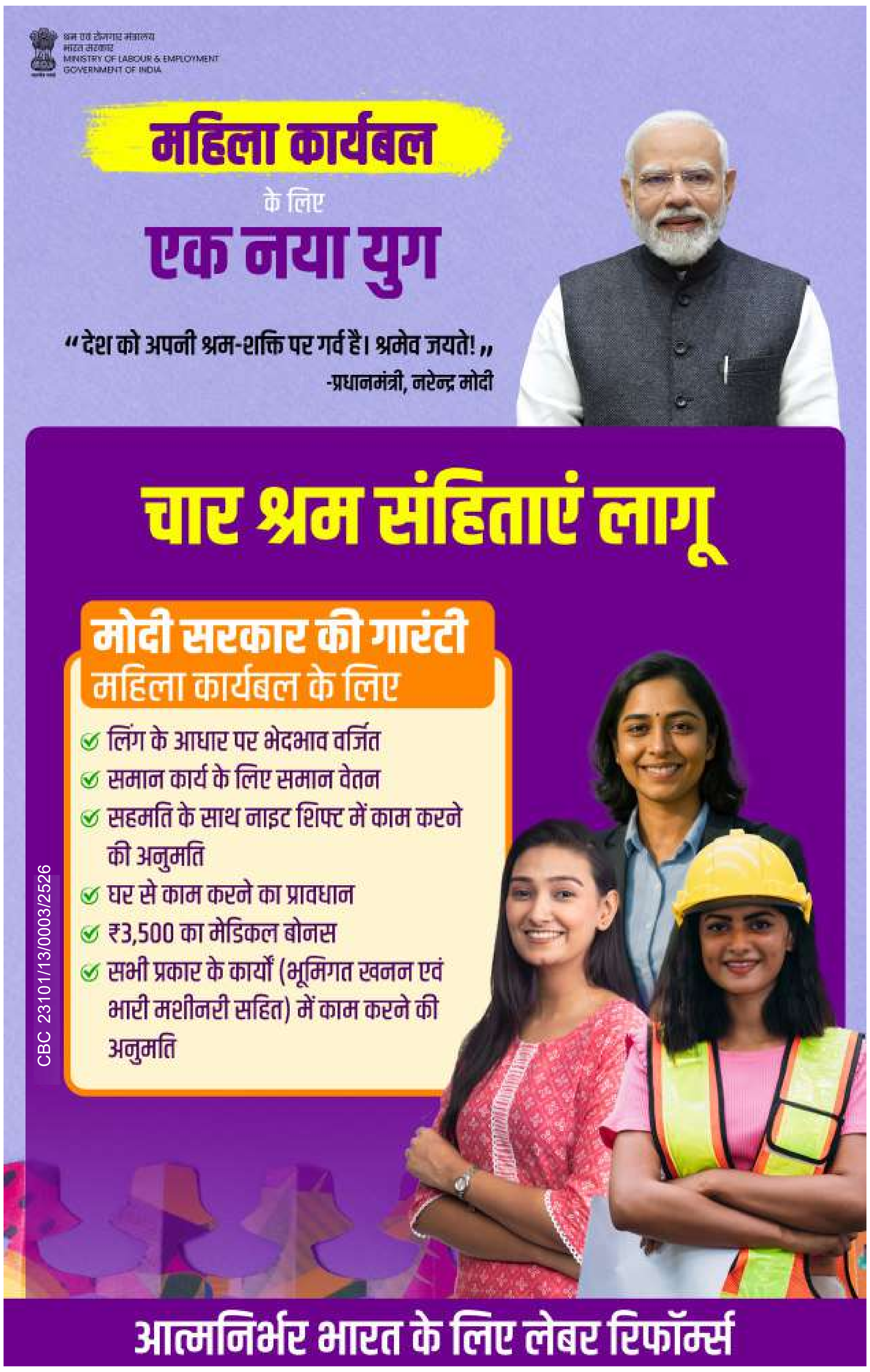

विविध समाचार

इस्तीफे के बाद पहले भाषण में जगदीप धनखड़ ने आरएसएस को जमकर सराहा

नयी दिल्ली २२/११ (संवाददाता): चार महीने पहले स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा देने वाले जगदीप धनखड़ ने शुक्रवार को पहली बार सार्वजनिक कार्यक्रम में हिस्सा लिया और मंच पर लौटते ही अपना राजनीतिक रुख साफ कर दिया। आरएसएस के संयुक्त महासचिव मनमोहन वैद्य की पुस्तक हम और यह विश्व के विमोचन समारोह में धनखड़ ने न सिर्फ संघ के विचारों की खुलकर प्रशंसा की, बल्कि भारत की सांस्कृतिक शक्ति और सज़्यतागत आत्मविश्वास को वैश्विक नेतृत्व का आधार बताया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए धनखड़ ने कहा कि भारत को अपनी जड़ों से जुड़े रहकर दुनिया के साथ संवाद करना चाहिए। उन्होंने पुस्तक को दिमाग का टॉनिक करार दिया और कहा कि यह भारतीय सज़्यताओं की निरंतरता और शक्ति को समझने का अवसर देती है। अपना संबोधन हिंदी में शुरू करने के बाद उन्होंने अंग्रेज़ी में बोलने का फैसला यह कहकर किया कि, जो लोग समझना ही नहीं चाहते, उन्हें उनकी ही भाषा में जवाब देना पड़ेगा। पुस्तक की चर्चा करते हुए उन्होंने यह भी कहा कि भारत के पास छह हजार वर्षों के सांस्कृतिक अनुभव के कारण अशांत दुनिया का मार्गदर्शन करने की अद्वितीय क्षमता है। उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के आरएसएस मुज़्यालय दौरे पर हुए विवाद का भी उल्लेख किया और इस विवाद को ुनियोजित नैरेटिव बताया। हम आपको बता दें कि हमेशा की तरह अनुशासन और कर्तव्य को लेकर धनखड़ का लहजा तीखा था। मंच पर ही किसी ने उन्हें 7ः30 बजे की ज़्लाइट की याद दिलाई, जिस पर उन्होंने कहा, मैं ज़्लाइट पकड़ने के लिए अपनी ड्यूटी नहीं छोड़ सकता और मेरा हाल का अतीत इसका सबूत है।

देखा जाये तो धनखड़ के इस कार्यक्रम में शामिल होने से कांग्रेस का वह दावा कमजोर पड़ता दिख रहा है कि भाजपा ने उन्हें उपराष्ट्रपति पद छोड़ने के लिए मजबूर किया था। यदि ऐसा होता, तो धनखड़ का पहला सार्वजनिक मंच संघ का कार्यक्रम नहीं होता और न ही उनका संबोधन इतना विचारात्मक, आत्मविश्वासी और संघ-समर्थक लहजे में होता। कांग्रेस इस उज़्मीद में थी कि इस्तीफे के बाद धनखड़ भाजपा और संघ परिवार पर तीखे हमले करेंगे और उनके असंतोष को राजनीतिक हथियार बनाया जा सकेगा। लेकिन शुक्रवार का दृश्य उलटा रहा— धनखड़ ने संघ के कार्यक्रम को चुना, संघ की विचारधारा की सराहना की और भाजपा के विमर्श को

मजबूती दी।

इससे कांग्रेस की उस राजनीतिक उज़्मीद को सीधा झटका लगा है, जिसमें वह यह सोचकर बैठी थी कि धनखड़ आगे चलकर एनडीए के आलोचक बनेंगे। बल्कि उनका रुख तो यह संकेत देता है कि उन्होंने वास्तव में स्वास्थ्य कारणों से ही इस्तीफा दिया था और भाजपा-संघ के साथ उनकी वैचारिक दूरी जैसी कोई बात नहीं है। देखा जाये तो कांग्रेस ने जहां धनखड़ के इस्तीफे में राजनीतिक षड्यंत्र खोजने की कोशिश की, वहीं धनखड़ ने संघ के मंच पर जाकर साफ कर दिया कि वह अब भी उसी वैचारिक धुरी के साथ खड़े हैं। संघ के कार्यक्रम में धनखड़ की यह दमदार मौजूदगी भाजपा के साथ उनके मजबूत जुड़ाव का खुला राजनीतिक संदेश भी मानी जा रही है।

दूसरी ओर, कांग्रेस को चूंकि धनखड़ के भाषण से निराशा हाथ लगी तो अब वह दूसरे एजेंडे पर उतर आई है। पार्टी नेता दिग्विजय सिंह ने भाजपा पर हमला करते हुए कहा है कि हवाई अड्डे पर एक भी भाजपा नेता धनखड़ को रिसीव करने नहीं आया। उन्होंने कहा, यह भाजपा की इस्तेमाल करो और फेंको वाली नीति है। जो उसके काम का नहीं, उसे छोड़ दो।%% हम आपको याद दिला दें कि धनखड़ ने अपने कार्यकाल के बीच में ही इस साल 21 जुलाई को अचानक इस्तीफा दे दिया था। इसके बाद से वह सार्वजनिक रूप से सिर्फ उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन के शपथ समारोह में ही नजर आये थे।जहां तक संघ के कार्यक्रम में धनखड़ के संबोधन की बात है तो उन्होंने कहा, हमें अंदरूनी आत्मविश्वास और सज़्यतागत ताकत के साथ दुनिया से जुड़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह किताब इस सोच को बढ़ावा देने और भारत की सांस्कृतिक नींव में विश्वास को मज़बूत बनाने के लिए दिमाग के टॉनिक की तरह काम करती है। धनखड़ ने कहा, पुस्तक हमें यह एहसास करने पर मजबूर करती है 6,000 से अधिक वर्षों के सतत सज़्यतागत ज्ञान के माध्यम से आकार ले रहे भारत के पास अशांति में दुनिया का मार्गदर्शन करने की अद्वितीय क्षमता है। धनखड़ ने कहा कि यह किताब मुश्किल और जटिल वर्तमान को समझने और भविष्य के लिए प्रेरणा देने का एक ज़रिया है। उन्होंने कहा, यह आठ साल में लिखे गए लेखों का संग्रह है। इसीलिए प्रणब दा (पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी) पर दो लेख हैं। हम निश्चित रूप से अपनी सांस्कृतिक बुनियाद और जड़ों को महसूस करेंगे। पूर्व राष्ट्रपति मुखर्जी के नागपुर में संघ के मुज़्यालय जाने और उससे जुड़े विवाद का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, जून 2018 में डॉ. प्रणब मुखर्जी के नागपुर में संघ मुज़्यालय के दौरे ने कई लोगों को हैरान किया और तीखी प्रतिक्रियाएं दीं, कुछ लोगों ने तो इस दौरे को ईशनिंदा तक कहा। धनखड़ ने कहा, निंदा की हद और बड़ाई बहुत ज़्यादा लग रही थी। इसे एक, %नैरेटिव% के तौर पर सामने लाने के लिए बनाया गया था ताकि राष्ट्रवादी रुख को कमजोर किया जा सके। फिर भी, अपने समय के सबसे बड़े नेताओं में से एक, प्रणब दा ने संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार के जन्मस्थान पर अतिथि पुस्तक में यह कहकर पूरे विवाद को शांत कर दिया, आज मैं यहां भारत माता के एक महान सपूत को सज़्मान और श्रद्धांजलि देने आया हूं,। उन्होंने दर्शकों की हंसी के बीच कहा कि हाल ही में उनके बारे में भी एक विमर्श बनाया गया था। लेकिन उन्होंने इस पर और बात नहीं की। धनखड़ ने कहा, एक खिलते हुए भारत को आकार देने की मुज़्य ज़िज़्मेदारी उसके लोगों की है। नागरिकों में ही आर्थिक राष्ट्रवाद की एक मज़बूत भावना को गढ़ने, सुरक्षा का एक मज़बूत इकोसिस्टम बनाने और एक गहरे सांस्कृतिक गौरव को बढ़ावा देने की बहुत ज़्यादा क्षमता होती है।

नीतीश-मोदी, भारतीय राजनीति की सबसे हिट जोड़ी, बिहार की जनता ने जताया गहरा विश्वास

पटना २२/११ (संवाददाता): बिहार में एनडीए सरकार के सज़ा में लौटने पर, जदयू के वरिष्ठ नेता और कैबिनेट मंत्री विजय कुमार चौधरी ने इस जनादेश को जनता के विश्वास का एक शानदार प्रतिबिंब बताया। पटना में पत्रकारों से बात करते हुए, चौधरी ने कहा कि ऐसी निर्णायक जीत तभी संभव है जब जनता गठबंधन और उसके नेतृत्व, खासकर मुज़्यमंत्री नीतीश कुमार पर पूरा भरोसा करे। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि पिछले दो दशकों में नीतीश कुमार के निर्बाध शासन ने इस विश्वास को मज़बूत किया है। उन्होंने कहा कि पिछले 20 वर्षों में उन्होंने निरंतर काम किया है। शासन और जनकल्याण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने लोगों का विश्वास मज़बूत किया है।

जनता का मानना है कि जब तक बिहार उनके हाथों में रहेगा, राज्य सुरक्षित रहेगा और विकास के पथ पर तेज़ी से आगे बढ़ेगा।

चौधरी ने आगे कहा कि यह जनादेश सिर्फ़ चुनावी नहीं है, बल्कि नीतीश कुमार के दीर्घकालिक प्रशासनिक दृष्टिकोण का समर्थन है। उन्होंने कहा कि बुनियादी ढाँचे, शिक्षा सुधार, महिला सशक्तिकरण और कानून-व्यवस्था जैसे क्षेत्रों में मुज़्यमंत्री के निरंतर प्रयासों से काफ़ी सुधार हुआ है। उन्होंने कहा, बिहार के लोगों ने स्पष्ट बदलाव देखे हैं।

वे उनके काम को जानते हैं, और इसीलिए इतना बड़ा जनादेश मिला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुज़्यमंत्री नीतीश कुमार के बीच राजनीतिक तालमेल का ज़िक्र करते हुए, चौधरी ने उनकी साझेदारी को भारतीय राजनीति के इतिहास की सबसे सफल जोड़ी बताया। उन्होंने कहा कि दोनों नेताओं के बीच आपसी समझ, समन्वय और संयुक्त विकास एजेंडे ने बिहार को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री मोदी और मुज़्यमंत्री नीतीश कुमार के संयुक्त नेतृत्व में बिहार तेज़ी से प्रगति कर रहा है। उनके विश्वास, सहयोग और राज्य के लिए साझा दृष्टिकोण ने विकास को गति दी है। आने वाले समय में बिहार और भी तेज़ी से आगे बढ़ेगा।

एनडीए ने 2025 के बिहार विधानसभा चुनावों में ऐतिहासिक प्रचंड जीत दर्ज की, जिसमें 243 में से 202 सीटें जीतीं, जबकि महागठबंधन केवल 35 सीटें ही हासिल कर सका। सज़ारूढ़ गठबंधन ने 243 सदस्यीय बिहार विधानसभा में तीन-चौथाई बहुमत हासिल किया, जो दूसरी बार है जब एनडीए ने राज्य चुनावों में 200 सीटों का आंकड़ा पार किया। 2010 में, इसने 206 सीटें जीती थीं।

हम हैं तो विश्व है, हिंदू धर्म के बिना सभ्यताएं विलुप्त-भागवत

इंफाल २२/११ (संवाददाता): आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि हिंदू समाज विश्व के अस्तित्व का केंद्र है, और हिंदुओं के बिना विश्व का अंत हो जाएगा, उन्होंने भारत की अमर सज़्यता पर जोर दिया।

इस बात पर ज़ोर देते हुए कि हिंदू समाज विश्व के अस्तित्व का केंद्र है, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने ज़ोर देकर कहा कि हिंदुओं के बिना, विश्व का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। मणिपुर की अपनी यात्रा के दौरान एक सभा को संबोधित करते हुए, भागवत ने कहा कि हिंदू समाज अमर है, और उन्होंने बताया कि भारत ने युनान (ग्रीस), मिस्र (मिस्र) और रोम जैसे साम्राज्यों को भी पीछे छोड़ दिया है। आरएसएस प्रमुख ने कहा कि दुनिया के हर देश ने हर तरह

की परिस्थितियाँ देखी हैं। युनान (ग्रीस), मिस्र (मिस्र) और रोमा, सभी सज़्यताएँ धरती से विलुप्त हो गईं।

हमारी सज़्यता में कुछ तो है जिसकी वजह से हम आज भी यहाँ हैं। जातीय संघर्षों के बाद मणिपुर की अपनी पहली यात्रा पर आए आरएसएस प्रमुख ने हिंदू समाज को धर्म का वैश्विक संरक्षक बताया। उन्होंने कहा कि भारत एक अमर सज़्यता का नाम है... हमने अपने समाज में एक ऐसा जाल बनाया है जिसकी वजह से हिंदू समुदाय हमेशा रहेगा। अगर हिंदू धर्म नष्ट हो गया, तो दुनिया की सज़्यताएँ भी नष्ट हो जाएँगी। अगर हिंदू नष्ट हो गए, तो दुनिया का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

उन्होंने स्पष्ट किया कि आरएसएस की स्थापना किसी बाहरी ताकत की प्रतिक्रिया के रूप में नहीं, बल्कि आंतरिक फूट को दूर करने के लिए की गई थी। उन्होंने डॉ. हेडगेवार के समाज को एकजुट करने के संकल्प को याद किया। उन्होंने कहा कि आरएसएस एक व्यक्ति-निर्माण और चरित्र-निर्माण आंदोलन है।卐 उन्होंने सभी को शाखाओं में जाकर यह समझने के लिए प्रोत्साहित किया कि संघ जमीनी स्तर पर कैसे काम करता है। भागवत ने कहा कि जो कोई भी भारतीय सज़्यता के प्रति प्रतिबद्धता के साथ समाज की भलाई के लिए काम करता है, वह पहले से ही एक अघोषित स्वयंसेवक है। उन्होंने कहा कि आरएसएस के लोग बोझ से मुक्त हैं; हम एक अच्छे समाज के अलावा कुछ नहीं चाहते। जनजाति नेताओं द्वारा उठाए गए मुद्दों पर उन्होंने आश्वासन दिया कि उनकी चिंताएँ राष्ट्रीय चिंताएँ हैं। उन्होंने आत्मनिर्भरता और संवैधानिक ढाँचे के भीतर समाधान पर ज़ोर दिया।

पश्चिम बंगाल में कोई बिल पेंडिंग नहीं, सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर बोले राज्यपाल सीवी आनंद बोस

कोलकाता २२/११ (संवाददाता): पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सीवी आनंद बोस ने शुक्रवार को कहा कि सर्वोच्च न्यायालय का हालिया आदेश, जिसमें कहा गया है कि अदालतें राष्ट्रपति और राज्यपालों द्वारा राज्य विधानमंडल द्वारा पारित विधेयकों को मंजूरी देने के लिए समय-सीमा निर्धारित नहीं कर सकतीं, भारतीय संविधान में शक्तियों के पृथक्करण के सिद्धांत को पुष्ट करता है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि संविधान में प्रत्येक पद के लिए %लक्ष्म रेखाएँ% खींची गई हैं। एएनआई से बात करते हुए, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल ने कहा, इससे यह संदेश गया है कि भारत का सर्वोच्च न्यायालय भारत के संविधान में निहित शक्तियों के पृथक्करण को बरकरार रखता है। इसका मतलब यह नहीं है कि राज्यपाल फाइलों पर हाथ धरे बैठे रह सकते हैं... निर्वाचित मुज़्यमंत्री निश्चित रूप से सरकार का चेहरा होता है, न कि मनोनीत राज्यपाल। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि यह फ़ैसला राज्यपाल और मुज़्यमंत्री की भूमिकाओं पर एक स्पष्ट संकेत

देता है, जो संवैधानिक सीमाओं का सज़्मान करते हुए सहयोग के महत्व को रेखांकित करता है। संविधान ने प्रत्येक पद के लिए %लक्ष्म रेखाएँ% खींची हैं। बोस ने आगे कहा कि सर्वोच्च न्यायालय के इस फ़ैसले से यही संदेश आया है कि इस सीमा को पार न करें, एकजुट रहें और मिलकर काम करें। यह टिप्पणी सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गुरुवार को अपनी सलाह देने के बाद आई है कि ज़्या वह राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों पर कार्रवाई करने के लिए राष्ट्रपति और राज्य के राज्यपालों पर समय-सीमा थोप सकता है। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि अदालतें राष्ट्रपति और राज्यपालों द्वारा राज्य विधानमंडल द्वारा पारित विधेयकों को मंजूरी देने के लिए समय-सीमा निर्धारित नहीं कर सकतीं। साथ ही, भारत के मुज़्य न्यायाधीश बीआर गवई की अध्यक्षता वाली पीठ ने स्पष्ट किया कि राज्यपाल विधेयकों को मंजूरी देने से अनिश्चित काल तक नहीं रोक सकते। पीठ ने कहा कि राज्यपालों को चिंताओं के समाधान के लिए राज्य विधानमंडलों के साथ बातचीत करनी चाहिए।

भारत के मुज़्य न्यायाधीश बीआर गवई की अध्यक्षता वाली एक संवैधानिक पीठ ने संविधान के अनुच्छेद 143 के तहत राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा भेजे गए 13 प्रश्नों का उज़र देते हुए अपनी राय जारी की, जिसमें पूछा गया था कि ज़्या राज्यपाल और राष्ट्रपति द्वारा राज्य विधेयकों को मंजूरी देने के लिए समय-सीमा तय की जा सकती है।

लागू हुए नए श्रम कानून:पीएम मोदी का कार्यबल कल्याण की ओर बड़ा कदम, गिग वर्कर्स को बड़ी राहत

नयी दिल्ली २२/११ (संवाददाता): सभी क्षेत्रों में श्रमिक कल्याण को मजबूत करने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में, भारत के लंबे समय से प्रतीक्षित श्रम सुधार आज से लागू हो गए हैं, सभी चार नए श्रम कोड आधिकारिक तौर पर अधिसूचित और 21 नवंबर, 2025 से लागू हो गए हैं।

नए श्रम कोडों ने गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों, महिला कर्मचारियों और एमएसएमई में कार्यरत लोगों को लाभान्वित करने वाले कई ऐतिहासिक सुधार पेश किए हैं। पहली बार, श्रम संहिताओं ने गिग वर्क, प्लेटफ़ॉर्म वर्क और एग्रीगेटर्स को औपचारिक रूप से परिभाषित किया है, जिससे डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर काम करने वाले लाखों लोगों को कानूनी स्पष्टता मिली है। एग्रीगेटर कंपनियों को अब अपने वार्षिक कारोबार का 1-2त्न एक समर्पित कल्याण कोष में जमा करना होगा, जिसकी अधिकतम सीमा श्रमिकों को किए गए कुल भुगतान का 5त्न होगी।

यह कोष सामाजिक सुरक्षा लाभों का समर्थन करेगा। श्रम एवं रोजगार मंत्री मनसुख मंडाविया ने एज़्स पर एक पोस्ट में कहा कि आज से देश में नए श्रम संहिता प्रभावी हो गए हैं... ये सुधार केवल साधारण बदलाव नहीं हैं, बल्कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा कार्यबल के कल्याण के लिए उठाया गया एक बड़ा कदम है। डिलीवरी और मोबिलिटी कर्मचारियों को बड़ी राहत देते हुए, घर और कार्यस्थल के बीच यात्रा के दौरान होने वाली दुर्घटनाओं को अब रोज़गार से संबंधित माना जाएगा, जिससे कर्मचारी दुर्घटना मुआवजे के पात्र बनेंगे। लाभों की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए, सरकार ने आधार से जुड़ा एक यूनिवर्सल अकाउंट नंबर शुरू किया है, जिससे राज्यों में कल्याणकारी योजनाओं तक आसान और पोर्टेबल पहुँच संभव हो सकेगी।

ये संहिताएँ सभी प्रकार के लैंगिक भेदभाव पर रोक लगाती हैं और समान कार्य के लिए समान वेतन सुनिश्चित करती हैं। महिलाएँ अब रात्रि पाली में काम कर सकती हैं और सभी प्रकार के उद्योगों में काम कर सकती हैं, जिनमें खनन और भारी मशीनरी जैसे पहले प्रतिबंधित क्षेत्र भी शामिल हैं, बशर्ते उनकी सहमति और अनिवार्य सुरक्षा व्यवस्था हो। 26 सप्ताह के सवेतन अवकाश, शिशुगृह सुविधाओं तक पहुँच और घर से काम करने के लचीले विकल्पों के साथ मातृत्व लाभों को और मज़बूत किया गया है।

महिला कर्मचारियों को 3,500 रुपये का चिकित्सा बोनस भी मिलेगा। इसके अतिरिक्त, महिला श्रमिकों के लिए परिवार की परिभाषा का विस्तार करके इसमें सास-ससुर को भी शामिल किया गया है, जिससे सामाजिक सुरक्षा प्रावधानों के तहत आश्रितों का दायरा बढ़ गया है।

इस कदम को प्रमुख श्रमिक संगठनों का भी समर्थन प्राप्त है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की श्रमिक शाखा, भारतीय मजदूर संघ (बीएमएस) ने नए श्रम संहिताओं के कार्यान्वयन का स्वागत करते हुए कहा है कि ये सुधार लंबे समय से लंबित सामाजिक सुरक्षा लाभ प्रदान करेंगे, श्रमिक अधिकारों को सुव्यवस्थित करेंगे और उन लाखों लोगों तक कवरेज का विस्तार करेंगे जो पहले औपचारिक दायरे से बाहर थे। बीएमएस ने कहा कि ये संहिताएँ गिग वर्कर्स, महिला कर्मचारियों और एमएसएमई श्रमिकों के लिए बेहतर कल्याण और सुरक्षा की दिशा में एक कदम हैं।

कलिंग समाचार
THE KALINGA SAMACHAR
(A Hindi Daily News Paper)
PUBLISHED FROM ODISHA, JHARKHAND & CHATTISHGARH
FOR NEWS AND ADVERTISEMENT CONTACT
AT: QRS. NO. B/204, SECTOR-16
ROURKELA, PH. 0661-2646999
PRAKASH KUMAR DHAL (EDITOR)
E-mail: thekalingasamachar@gmail.com

विविध समाचार

सुअर पालन लाभ का व्यवसाय

सूअर पालन किन्हें करना चाहिए?

● छोटे एवं भूमिहीन किसान, आंशिक कार्य के तौर पर शिक्षित बेरोजगार लोगों के लिए आय का अच्छा साधन है।

● अशिक्षित महिलाओं एवं युवाओं के लिए सुअर पालन अच्छा व्यवसाय है।

प्रजातियां– वृहद श्वेत यार्कशायर, लेण्डरेस, मध्य श्वेत यार्कशायर–

प्रजनन के लिए सन्तति का चयन

सुअरों का अच्छा समूह विकसित करने के लिए निम्न विशेषताएं होनी चाहिए–

● सुअर में बच्चे पैदा करने की ताकत, जैव शक्ति एवं दूध उत्पादन की क्षमता होनी चाहिए।

● प्रत्येक किसान को सुअर का समूह पालने के पूर्व जांच करें कि सुअर विश्वसनीय और रोगमुक्त हो। इस प्रकार की जानकारी ले लेना चाहिए। एक बार सुअरों का समूह स्थापित होने के बाद, मादा एवं नर सुअरों का प्रतिस्थापन, संकरण करें।

● जब मादा सुअर को प्रजनन समूह में रखना हो तब उसका वजन करीब 90 किलोग्राम हो।

● वयस्क मादा सुअरों का चयन करते समय देखें कि उनकी माँ अधिकांश बच्चे बचाने वाली हो।

● बाजार की मांग के अनुरूप हो, कम से कम समय में अधिक वजन प्राप्त हो।

● यह वांछनीय है कि मादा सुअर से मेटिंग करे और प्रतिदिन उनका वजन बढ़ें। साथ ही दाना मांस में परिवर्तित करने की क्षमता हो।

नर व मादा सुअरों का प्रतिस्थापन के दौरान मुख्य बिन्दुओं का ध्यान रखें

● सुअर की मां हमेशा 8 से अधिक बच्चे पैदा करने वाली रही हो। दूध छोड़ने के समय (56 दिन) मादा सूअर का वजन 120 किलोग्राम से कम न हो। नर व मादा दोनों ही 6 माह में 90 किलोग्राम वजन प्राप्त कर लें।

● सुअर का शरीर पर्याप्त लम्बाई और गहराई वाला हो एवं कसा हुआ मांसल शरीर हो।

● सुअर का पैर व पंजे मजबूत हो। सुअर का पिछला हिस्सा मांसल सुअर की वसा का मात्रा को इंगित करता है जैसे कि मादा सुअर में 4 सेमी मोटाई का पिछला हिस्सा मांसल हो, एवं नर सुअर में 3.2 सेमी पिछला हिस्सा होना चाहिए।

● मादा सुअर में 12 की संख्या मे कार्यशील चुचुक हो। बंद चुचुक वाले जानवर नहीं पालने चाहिए, क्योंकि इनसे दूध नहीं निकलता है, और यह दोष अनुवांशिक भी होता है।

● चयन के दौरान ब्रसेल और लेप्टोस्पयरा का टीका लगा होना चाहिए।

● सुअर सभी प्रकार की संक्रामक बीमारियों से मुक्त हो।

किसी भी ब्रीडिंग फार्म के लिए नर सुअरों का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण है। नर सुअर सदैव ब्रीडर फार्म से खरीदें जिन्हें इनके बारे सही जानकारी हो। नर सूअर सदैव ऐसे हो कि अच्छी किस्म की मादा से पैदा हुए हों, जो अत्यधिक बच्चे पैदा करती हो। दूध छोड़ने के बाद सूअर का वजन 90 किलोग्राम हो।

खाद्य आहार प्रबंधन

● सबसे सस्ते खाद्य आहार घटकों का इस्तेमाल हो।

● मक्का, ज्वार, बाजरा, गेहू , चावल आदि का प्रयोग हो।

●प्रोटीन घटकों में आयल केक, मछली का चूना खली हो।

● सुअर यदि बाहर घास चरते हैं तो उन्हें कोई भी विटामिन घटक देने की जरुरत नहीं है, यदि उन्हें पशु प्रोटीन नहीं देते हैं, तब विटामिन बी 12 का घटक दें।

● प्रति किलो राशन में 11 मिलीग्राम एंटीबायोटिक का मिश्रण दें।

● खनिज मिश्रण का पर्याप्त मिलान हो सभी प्रकार के दानों का मिश्रण पिसा हुआ हो गीला दाना नहीं पिसाना चाहिए, सूखा दाना पिसाई करना चाहिए। गीली पिसाई में अधिक समय व श्रम लगता है। यदि दाने में फाइबर अधिक है, तो पेलेटेड दाना बनाना चाहिए। पेलेटेड दाने से आहार की बर्बादी रुक जाती है।

सुअरों का अच्छा समूह विकसित करने के लिए निम्न विशेषताएं होनी चाहिए–

● सुअर के लीटर की ताकत एवं जैव शक्ति, दूध उत्पादन की क्षमता।

● लाभ, दाना परिवर्तित करने की क्षमता।

लघुधान्य फसलों की उत्पादन तकनीक

भूमि की तैयारी

ये फसलें प्रायः हर प्रकार की भूमि में पैदा की जा सकती हैं। जहां कोई अन्य धान्य फसल उगाना संभव नहीं होता, वहां भी ये फसलें सफलतापूर्वक उगाई जा सकती हैं। उतार–चढ़ाव वाली, कम जलधारण क्षमता वाली, उथली सतह वाली आदि कमजोर किस्म की भूमि में यह फसलें अधिकतर उगाई जा रही हैं। हल्की भूमि में, जिसमें पानी का निकास अच्छा हो, इनकी खेती के लिए उपयुक्त होती हैं।

बीज का चुनाव एवं मात्रा

भूमि की किस्म के अनुसार उन्नत किस्म के बीज का चुनाव करें। हल्की पथरीली व कम उपजाऊ भूमि में जल्दी पकने वाली जातियों का तथा मध्यम गहरी व दोमट भूमि में एवं अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में देर से पकने वाली जातियों की बोनी करें। लघु धान्य फसलों की कतारों में बुवाई के लिए 8–10 किलोग्राम बीज तथा छिटकवां बोनी के लिए 12–15 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है।

बोने का समय, बीजोपचार एवं बोने का तरीका

वर्षा आरंभ होने के तुरंत बाद लघु धान्य फसलों की बोनी कर दें। शीघ्र बोनी करने से उपज अच्छी प्राप्त होती है। कोदों में सूखी बोनी मानसूनी वर्षा आने के दस दिन पूर्व करने पर उपज में अन्य विधियों से अधिक उपज प्राप्त होती है। बोनी के पूर्व बीज को मेंकोजेब या थायरम दवा 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीजोपचार करें। ऐसा करने से बीज जनित रोगों एवं कुछ हद तक मिट्टी जनित रोगों से फसल की सुरक्षा होती है। कतारों में बोनी करने पर कतार से कतार की दूरी 20–25 सेमी तथा पौधों से पौधों की दूरी 7 सेमी उपयुक्त पाई गई है। इसकी बोनी 2–3 सेमी गहराई पर करें। प्रयोगों द्वारा पाया गया है कि कोदों में 6–8 लाख एवं कुटकी में 8–9 लाख पौधे प्रति हेक्टेयर अधिकाधिक उत्पादन वृद्धि हेतु आवश्यक होता है।

खाद एवं उर्वरक का उपयोग

प्रायः किसान इन लघु धान्य फसलों में उर्वरक का उपयोग नहीं करते हैं। किन्तु कुटकी, कंगनी, सांवा के लिए 40 किलो यूरिया, 125 किलो स्फुर/ हेक्टेयर तथा कोदो एवं रागी के लिए 87 किलो यूरिया व 125 किलो स्फुर प्रति हेक्टेयर का उपयोग करने से उपज में वृद्धि होती है। उपरोक्त नत्रजन की आधी मात्रा व स्फुर की पूरी मात्रा बुवाई के समय एवं नत्रजन की शेष आधी मात्रा बुवाई के तीन से पांच सप्ताह के अंदर निंदाई के बाद दें।

निंदाई गुड़ाई

बुवाई के 20–30 दिन के अंदर एक बार हाथ से निंदाई करें तथा जहां पौधे न उगे हो वहां पर अधिक घने उगे पौधों को उखाड़कर रोपाई करके पौधों की संख्या उपयुक्त करें। यह कार्य 20–25 दिनों के अंदर कर ही लें। यह कार्य पानी गिरते समय सर्वोत्तम होता है।

उन्नत जातियां

(अ) **कोदों** – जवाहर कोदों 48 (डिण्डौरी–48), जवाहर कोदों – 439, जवाहर कोदों – 41, जवाहर कोदों – 62, जवाहर कोदों – 76, जीपीयूके – 3

(ब) **कुटकी** – जवाहर कुटकी – 1(डिण्डौरी–1), जवाहर कुटकी–8, सीओ– 2, पीआरसी – 3

(स) **रागी** – एचआर–374, आरएयू–8, जेएनआर–2, जेएनआर–852, जेएनआर–1008

(द) **कंगनी** – अर्जुना, – एसआईए–326

(ई) **सांवा** – कीएल–29, के–1

(फ) **चीना** – जीपीयू–17, के–1

फसल की कटाई-गहाई एवं भण्डारण

फसल पकने पर कोदों व कुटकी को जमीन की सतह के ऊपर कटाई करें। खलिहान में रखकर सुखाकर बैलों से गहाई करें। उड़ावनी करके दाना अलग करें। रागी सांवा एवं कंगनी को खलिहान में सुखाकर तथा इसके बाद लकड़ी से पीटकर अथवा पैरों से गहाई करें। दानों को धूप में सुखाकर भण्डारण करें।

ज्वार उत्पादन की उन्नत तकनीक

भूमि व भूमि की तैयारी

ज्वार के लिये ऐसे खेत का चुनाव करें जिसमें जल निकास की उचित व्यवस्था हो, जहां पर पानी रुकता हो वहां पर ज्वार की बुवाई न करें। ज्वार की बोनी के पूर्व, खेत की 3–4 बार जुताई कर खेत की तैयारी करें।

बीज दर व बुवाई का समय

ज्वार की बुवाई मानसून सक्रिय होने के बाद तुरंत कर दें, अन्यथा तना छेदक कीट व प्रकोप अधिक होता है। ज्वार की बुवाई का उपयुक्त समय जून अंत से मध्य जुलाई तक का है। बुवाई के लिये 12–15 किग्रा प्रमाणित बीज/हैक्टेयर की दर से लें, कतार से कतार की दूरी 45 से.मी. व पौधे से पौधे की दूरी 12–15 से.मी. रखें, ध्यान रखें बीज 2–3 से.मी. से अधिक गहरा न जाये। इस तरह से बुवाई करने पर 1,50,000 से 1,75,000 लाख पौधे प्रति हैक्टेयर रखे जा सकते हैं।

उन्नत किस्में

1. कम्पोजिट किस्में– जवाहर ज्वार–741, जवाहर ज्वार–938, जवाहर ज्वार–1041, एस.पी.वी.–1022, एसएसवी–15.

2. संकर किस्में– सी.एस.एच.–5, सी.एस.एच.–6 सी.एस.एच.–9, सी.एस.एच.–18, सी.एस.एच.–16.

भूमि उपचार

भूमिगत कीड़ों व दीमक की रोकथाम के लिये क्यूनॉलफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किग्रा/हैक्टेयर की दर से बुवाई से पूर्व खेत में मिला दें।

बीज उपचार

ज्वार के बीज को बुवाई पूर्व 2.5 ग्राम थायरम या मैंकोजेब प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। उसके पश्चात बीज को ऐजेटोबैक्टर तथा पी.एस.बी. कल्चर से उपचारित करें। एजेटोबैक्टर कल्चर से उपचारित करने पर 20 किग्रा नत्रजन की प्रति हैक्टेयर बचत की जा सकती है।

अन्तरवर्तीय फसल

ज्वार के साथ दलहनी फसलों की अन्तरवर्तीय फसलें जहां भी संभव हो लें। ज्वार की कम ऊंचाई व शीघ्र पकने वाली किस्मों के साथ–साथ दलहनी फसलें जैसे अरहर, मूंग, सोयाबीन की अन्तरवर्तीय फसल लगाकर किसान भाई अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

खाद व उर्वरक

ज्वार के अच्छे उत्पादन हेतु सिंचित अवस्था में 80 किग्रा नत्रजन: 40 किग्रा स्फुर: 20 किग्रा पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें व असिंचित अवस्थ में 40 किग्रा नत्रजन, 20 किग्रा स्फुर व 20 किग्रा पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें।

निंदाई - गुड़ाई

बाजरे के अच्छे उत्पादन में निंदाई व गुड़ाई का विशेष महत्व है यह कार्य बुवाई से 20–25 दिन बाद करने से वायु का संचार अच्छा होता है व पौधों पर मिट्टी चढ़ जाती है व नमी लम्बे समय तक बनी रहती है, यदि लगातार बरसात हो रही है तो रसायनिक खरपतवारनाशक एट्राजीन की 0.5 किग्रा (सक्रिय तत्व) का 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

उपज

सामान्यत: ज्वार की उन्नत किस्मों व उन्नत विधियों से खेती करने पर औसतन 30–45 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक दाने की उपज मिल जाती है। ज्वार की कड़वी से औसत सूखा चारा 80–100 क्विंटल/हैक्टेयर उपज प्राप्त होती है।

कलिंग समाचार

संपादकीय

रविवार 23 नवंबर 2025

बुलडोज़र पर सुप्रीम कोर्ट की सख्ती वाजिब

पिछले कुछ समय से प्रशासकीय आतंक का प्रतीक बन चुकी बुलडोज़र न्याय प्रणाली आखिरकार सुप्रीम कोर्ट के निशाने पर आ ही गई। भारतीय जनता पार्टी द्वारा जिन राज्यों में शासन किया जा रहा हैए वहां की सरकारें विरोधियोंए खासकर अल्पसं यकों के घरों को केवल इस आधार पर बेरहमी से गिराती आ रही हैं जो किसी न किसी अपराध में आरोपी बनाए जाते हैं। दोष सिद्धि के पहले ही सरकारों द्वारा मकान.दूकान ध्वस्त करना भाजपा सरकारों की कार्यप्रणाली का हिस्सा बन गया है। उत्तर प्रदेश में तो यह काम बेहद धड़ल्ले से होता आ रहा है जिसके अंतर्गत न सिर्फ किसी अपराध में अल्पसं यकों को शामिल बतलाते हुए घरों को जमींदोज किया जाता हैए बल्कि राजनीतिक विरोधियों को भी नहीं ब शा जाता। किसी न किसी बहाने से अल्पसं यक समुदाय के लोगों एवं विरोधी मत रखने वाले नेताओं.कार्यकर्ताओं के घरों को गिराया जाता रहा है। उप्रए गुजरातए असमए मध्यप्रदेश राजस्थान आदि राज्यों में बुलडोज़र के प्रति वहां की सरकारों का विशेष अनुराग देखा गया है। बड़ी सं या में लोगों ने अपने सरों पर से साया केवल इस कारण से खोया है कि उनके परिवार का कोई सदस्य किसी अपराध में शामिल पाया गया। जमीयत उलेमा ए हिंद ने पिछले दिनों एक याचिका दाखिल कर सरकारों द्वारा मनमाने ढंग से बुलडोज़रों का इस्तेमाल कर घरों को तोड़ने पर रोक लगाने की मांग की थी। विशेषकर दिल्ली के जहांगीरपुरी मामले में वकील फरूख रशीद ने जो याचिका दाखिल की हैए उसमें कहा गया है कि भाजपा सरकारें अल्पसं यकों एवं हाशिये पर खड़े लोगों के घरों को तोड़कर दमन कर रही है। इससे पीड़ितों को कानूनी उपचार का अवसर नहीं मिल पाता। इस याचिका पर सुनवाई करते हुए शीर्ष कोर्ट ने सोमवार को सुनवाई करते हुए साफ किया कि अपराधी पाये जाने पर भी किसी के घर को इस प्रकार नहीं तोड़ा जा सकता। हालांकि महाधिवक्ता तुषार मेहता का कहना था कि निर्माणों को युनिसिपल कानूनों के अंतर्गत तोड़ा जा रहा है। यानी अवैध होने के कारण इन पर बुलडोज़र चल रहे हैं। जस्टिस बीआर गवई और जस्टिस केवी विश्वनाथन की बेंच ने सरकार को नोटिस भेजकर जवाब मांगा है। वैसे बेंच ने साफकिया कि वह अवैध और अवरोध बन चुके निर्माणों को संरक्षण नहीं देने जा रही है। उसने सरकारों से सुझाव भी मांगे हैं ताकि वह आवश्यक दिशा.निर्देश जारी कर सके। उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश से इस बुलडोज़र दमन की शुरुआत हुई थी जिसमें सरकार की ओर से अल्पसं यकों तथा भाजपाविरोधी लोगों के निर्माणों को किसी न किसी बहाने से ध्वस्त करने की पर परा शुरू की गई। वहां के मु यमंत्री योगी आदित्यनाथ को श्बुलडोज़र बाबा्य के नाम से भी स बोधित किया जाने लगा। यहां तक कि जिन अन्य राज्यों में आदित्यनाथ चुनावी सभाओं को स बोधित करने जाते हैंए वहां भी उनके स्वागत में बुलडोज़र रखे जाने लगे। मुस्लिमों के प्रति नफरत करने वाले कट्टरपंथियों के बीच उनकी लोकप्रियता का यह बड़ा कारण बन गया। इसकी देखा.देखी राजस्थानए मध्यप्रदेशए असमए गुजरात आदि में भी कमजोर तबकों व अल्पसं यकों के घरों तथा बस्तियों पर अंधाधुंध बुलडोज़र चलाकर न केवल घर बल्कि परिवार के उन सदस्यों को भी सज़ा दी गई जो कथित अपराध में शामिल नहीं थे। एमनेस्टी इंटरनेशनल तक यह मामला पहुंचा था जिसने इस वर्ष की फरवरी में यह तथ्य सामने लाया था कि अप्रैल 2022 से जून 2023 तक उपरोक्त राज्यों में 128 स पत्तियों को बुलडोज़र चलाकर धराशायी किया गया। मध्यप्रदेश में एक आरोपी के पिता की स पत्ति पर बुलडोज़र चलाया गया तो वहीं राजस्थान में एक अवयस्क छात्र के घर को नेस्तनाबूद कर दिया गया जिस पर अपने सहपाठी को चाकू से गोदने का आरोप था। भाजपा ने बुलडोज़र न्याय को अपने कड़े प्रशासन का प्रतीक बनाकर प्रचारित किया लेकिन अनेक देशों में इसकी आलोचना भी हुई है जिसके कारण भारत सरकार की बदनामी हुई है। कुछ देशों में तो भाजपा समर्थकों ने राष्ट्रीय पर्वों पर बुलडोज़र को भी जुलूस में शामिल किया था जिसके कारण उन्हें वहां की सरकारों की ओर से कार्रवाई की चेतावनी तक मिली थी।

नगालैंड का एक आत्मनिर्भर गांव

बाबा मायाराम

इसका एक उद्देश्य नई पीढ़ी को परंपरागत हस्तकला का कौशल हस्तांतरित करना है। नई युवा पीढ़ी को इस हुनर को सिखाना हैए उन्हें प्रशिक्षित करना है। चिजामी के बुनाई सिलाई केन्द्र में आसपास के गांवों व कस्बों की युवतियां प्रशिक्षण लेती हैं। महिलाएं आत्मनिर्भर हुई हैं जिससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है। बच्चों की शिक्षा बेहतर हुई है। उनमें नेतृत्व क्षमता का विकास हुआ है। युवाओं की बेरोजगारी कम हुई है। यह चिजामी का माडल सराहनीय होने के साथ साथ अनुकरणीय भी है।

कुछ समय पहले मुझे नगालैंड के एक गांव में करीब सप्ताह भर रहने का मौका मिला। वहां जंगल थाए खूबसूरत पहाड़ थेए पीने के पानी के जलस्रोत के झरने थेए पौष्टिक अनाजों की खेती थी। अच्छा स्कूल था। समृद्ध पुस्तकालय था। परंपरागत हस्तकला थी। यहां परंपरा के साथ आधुनिक जीवनशैली की झलक दिखाई देती थी। इस कॉलम में नगालैंड के इस अनूठे अनुभव को साझा करना चाहूंगाए जिससे अल्पज्ञात इस इलाके की एक झलक मिल सके ।दक्षिणी नगालैंड का एक छोटा गांव है चिजामी। यह गांव वैसे तो आम गांवों की तरह हैए लेकिन यहां होने वाले सामाजिक.आर्थिक बदलावों ने इसे खास बना दिया है। महिला अधिकारों से लेकर टिकाऊ खेती और पारंपरिक आजीविका के कामों ने इसे एक आदर्श गांव बना दिया है। बुनाई.सिलाई जैसी पारंपरिक हस्तकला को पुनर्जीवित किया है।

उत्तर पूर्व का यह इलाका कई विविधताओं व प्राकृतिक सुंदरता के लिए मशहूर है। यहां की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता के लिए भी जाना जाता है। इसकी झलक इस गांव में भी दिखाई दी। यहां खान.पानएरंग बिरंगी पोशाक व सादगीपूर्ण जीवनशैली की भी अनूठी संस्कृति है।

देश.दुनिया में इस गांव की पर्यावरण संरक्षण और आत्मनिर्भर के मामले में मिसाल दी जाती है। यहां की महिलाएं बुनकरी के माध्यम से आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। पौष्टिक अनाजों की खेती को पुनर्जीवित भी किया जा रहा है। और यहां की पारंपरिक बुनकरी का कोई जोड़ नहीं है। यहां के डिजाइन वाले कपड़ों की काफी मांग है।

फेक जिले के अंतर्गत आता है चिजामी। यहां 600 घर हैं और आबादी 3000 के आसपास है। यह गांव पहाड़ और जंगल के बीच स्थित है। चिजामीए नागालैंड की राजधानी कोहिमा से 88 किलोमीटर दूर है।

मैं यहां इस गांव की बदलाव की कहानी देखने.समझने गया था। इस दौरान मैं कई लोगों व गांव के समूहों से मिला। यहां की खेतों में गयाए किसानों से मिला। यहां देसी बीज बैंकों को देखा और युवाओं से बात की। प्राकृतिक खेती भी देखीए जिसमें हल नहीं चलाया जाता। झूम खेती में भी हल नहीं चलाया जाता।

लेकिन प्राकृतिक खेतीए कुछ मत करोए के सिद्धांत पर की जाती है। जबकि झूम खेती में बारिश के पूर्व पत्तियों व छोटी टहनियों को जलाकर उसकी राख में बीज छिड़क दिए जाते हैंए जो बारिश होने पर उग आते हैं और बाद में फसलें पक जाती हैं। इसमें मिश्रित फसलें बोई जाती हैं।

यहां एक महिला अधिकारों पर काम करने वाली संस्था हैए जिसका नाम नार्थ ईस्ट नेटवर्क है। यह महिला स्वास्थ्यए पर्यावरणए प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन और पर्यावरण शिक्षा पर काम करती है। यह संस्था 1995 के आसपास से कार्यरत है। तीन राज्यों. असमए मेघालय और नागालैंड में काम करती है। संस्था ने महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए काम किए हैंए जिनमें से एक है चिजामी की पारंपरिक बुनाई। चिजामी में एनईएन ; नार्थ ईस्ट नेटवर्कद्ध का मु य कार्यालय है और बुनाई.सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र भी है।

यह पूरा इलाका पहाड़ों से घिरा बहुत खूबसूरत है। यहां झूम खेती होती है। लेकिन खेती के काम के बाद भी काफी खाली समय होता हैए उसमें महिलाएं घरों में बुनाई का काम करती थीं। आम तौर पर अप्रैल से अक्टूबर तक महिलाओं का काम खेती.किसानी में होता है। और इसके बाद वे नवंबर से मार्च तक बुनाई का काम करती हैं।

महामारी के दौरान इससे स्वास्थ्य और भोजन पर एक नई चेतना पैदा हुई है। इसी तरहए महिलाओंए बच्चों और युवाओं ने इस बात को दिखाया है कि किस तरह स्थानीय स्तर पर जैविक उत्पाद उगाए जा सकते हैंए भोजन की जरूरतें पूरी की जा सकती हैं। रोजगार में भी आत्मनिर्भर बना जा सकता है। इसके अलावाए इस गांव में खेल मैदानए पुस्तकालयए देसी बीज बैंक और स्थानीय सामग्री से बने लकड़ी के घर हैं। यह काफी साफसुथरा गांव है।

यहां विशेष नागा हथकरघे पर जिसे अंग्रेजी में लोइन लूम कहते हैंए पर बुनाई की जाती है। पारंपरिक पोशाकों की बुनाई पहले भी होती थीए लेकिन वह परिवार और त्यौहारों की जरूरत के लिए महिलाएं करती थीं। पारंपरिक परिधानों से लेकर अब घर की सजावट के लिए फैशनपरस्त सामान और पोशाक सामग्री के कई उत्पाद बनाती हैं ।साल 2008 में 7 महिलाओं के साथ शुरू हुई इस यात्रा में आज सैकड़ों महिलाएं जुड़ चुकी हैं। फेंक जिले के करीब दर्जन भर से ज्यादा गांवों में इसका नेटवर्क है। यहां के विशेष हथकरघे से बने उत्पादों को बढ़ावा दिया गया है। जिसमें परंपरागत नागा शाल और मेखला प्रमुख हैं। इसके अलावाए बेल्टए झोलाए मफ्लरए बटुआए टेबल रनरएशालए कुशन कवर आदि शामिल हैं। इनमें ये सभी उत्पाद कई तरह की डिजाइन में उपलब्ध हैं। इन उत्पादों को प्रदर्शनियों मेंए मेलों में और एनईएन के चिजामीए कोहिमा और गुवाहाटी कार्यालयों से खरीदा जा सकता है। इसके साथ ही मुंबईए दिल्लीए गोवा और गुवाहाटी की चुनिंदा दुकानों में भी उपलब्ध हैं।

बुनाई घरों में होती है और उत्पाद बनाकर एनईएन केन्द्र में देते हैं। इन केन्द्रों में उत्पादों की गुणवत्ता की जांच कर निर्धारित राशि का भुगतान किया जाता है।

इस काम से जुड़ी एक महिला बताती है कि वे इस काम से 10 साल से जुड़ी हैं और यह कई तरह से मददगार है। उनकी बेटी की पढ़ाई में मदद मिली। उनका कई कार्यक्रमों से आत्मविश्वास बढ़ा। आगे वे कहती हैं कि शुरूआत में इस काम को परिवार में पसंद नहीं किया जाता थाए लेकिन जब इससे आय बढ़ने लगी तो इसे मान्यता मिलने लगी।

इस कार्यक्रम से जुड़ी एक अन्य कार्यकर्ता ने बताया कि हमने पुराने परंपरागत घर की बुनाई को पुनर्जीवित किया। इसके लिए मुंबई और दिल्ली से विशेषज्ञों व डिजाइनरों की मदद ली गई। और कई तरह के उत्पाद विकसित किए। और लालए काले और सफेद के अलावा दूसरे रंग भी आजमाए हैं।

कोविड महामारी के दौरान यहां की महिलाओं ने सामाजिक जागरूकता अभियान चलाया था। साथ ही लोगों की मदद भी की थी। उन्हें वैकल्पिक रोजगारों से भी जोड़ा था। बाजारों में महिलाओं ने भी दुकानें लगाई थीए जिससे उनके जीविकोपार्जन में दिक्कत न आए। महिलाओं के साथ युवाओं ने मोबाइल व सोशल नेटवर्किंग की मदद से लोगों का सहयोग किया।

महामारी के दौरान इससे स्वास्थ्य और भोजन पर एक नई चेतना पैदा हुई है। इसी तरहए महिलाओंए बच्चों और युवाओं ने इस बात को दिखाया है कि किस तरह स्थानीय स्तर पर जैविक उत्पाद उगाए जा सकते हैंए भोजन की जरूरतें पूरी की जा सकती हैं। रोजगार में भी आत्मनिर्भर बना जा सकता है।

इसके अलावाए इस गांव में खेल मैदानए पुस्तकालयए देसी बीज बैंक और स्थानीय सामग्री से बने लकड़ी के घर हैं। यह काफी साफसुथरा गांव है। यहां हर वर्ग के लोगों के लिए उनके कार्यालय हैं। जैसे महिला समूहों का एक कार्यालय हैए युवाओं का भी है। यह एक आदर्श गांव की तरह है।अगर हम इसे आदर्श मानेंए तो हमें आदर्श गांव में क्या क्या चाहिएए इसकी फेहरिस्त बन सकती है। जैसे एक गांव में अच्छा होने के लिए जंगल चाहिए या पेड़.पौधे से हराकृभरा गांव होना चाहिएए जिससे जल का संरक्षण हो। ऐसी खेती चाहिएए जिससे मिट्टी.पानी का संरक्षण हो। यानी रासायनिक खादों व कीटनाशकों से बचा जाएए जो हमारी खेती को प्रदूषित कर रहे हैं दस्तकारी के कामों से परंपरागत कला व हुनर भी बचेंगे और आजीविका भी मिलेगी। इस पूरे कार्यक्रम का एक पहलू युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना भी है। उन्हें पारंपरिक कौशलों से जोड़ना है। उन्हें पर्यावरण व पारिस्थितिकीय से जोड़नाए न्यायसंगत और टिकाऊ खाद्य प्रणालियों को समझानाए सकारात्मक व रचनात्मक कामों से जोड़ना भी है। उन्हें इसके लिए खेतों व जंगलों का भ्रमणए जैव विविधता की सैरए खेती के तौर.तरीके सिखानाए पौधे लगाना और उनकी परवरिश करना सिखाना भी है। मिट्टीए पानीए बीज प्रणालीए कीटों के बारे में भी जानकारी दी जाती है। पर्यावरण संरक्षण पर जोर दिया जाता है। इसके लिए समय समय पर प्रशिक्षण कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं।

कुल मिलाकरए इस पूरे काम से कुछ बातें कही जा सकती हैं। चिजामी में आदर्श गांव है। यहां महिलाओं ने इसे स्वावलंबी बनाने की दिशा में काफी काम किया है। चिजामी की बुनाई का यह काम टिकाऊ आजीविका हैए विशेषकर उन महिलाओं के लिए जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं। इससे नगालैंड की पारंपरिक हस्तकला का संरक्षण हुआ है। नागाओं के विशेष हथकरघे से बने उत्पादों को देश.दुनिया के बाजारों में पहुंचाया गया है। इसका एक उद्देश्य नई पीढ़ी को परंपरागत हस्तकला का कौशल हस्तांतरित करना है। नई युवा पीढ़ी को इस हुनर को सिखाना हैए उन्हें प्रशिक्षित करना है। चिजामी के बुनाई सिलाई केन्द्र में आसपास के गांवों व कस्बों की युवतियां प्रशिक्षण लेती हैं। महिलाएं आत्मनिर्भर हुई हैं जिससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है। बच्चों की शिक्षा बेहतर हुई है। उनमें नेतृत्व क्षमता का विकास हुआ है। युवाओं की बेरोजगारी कम हुई है। यह चिजामी का माडल सराहनीय होने के साथ साथ अनुकरणीय भी है। लेकिन क्या हम आत्मनिर्भर गांवों बनाने की दिशा में सचमुच कुछ करने के लिए तैयार हैं?

अमेरिकी फेडरल रिजर्व की भारी कटौती का वैश्विक स्तर पर शेयर बाजारों पर असर

अंजन रॉय

अमेरिकी अर्थव्यवस्था का व्यवहार हैरान करने वाला रहा है। पारंपरिक आर्थिक तर्क के अनुसारए केंद्रीय बैंक ब्याज दरें तब बढ़ाते हैं जब कीमतें बढ़ रही होती हैं। उच्च ब्याज दर मांग को दबा देती हैए निवेश को कम करती हैए जिससे रोजगार में कमी आती है। इस प्रकारए रोजगार और मूल्य वृद्धि के बीच एक विशेष संबंध है।

19 सितंबर दुनिया भर के वित्तीय बाजारों के लिए एक बड़ा दिन था। अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने आखिरकार वैसा ही किया जैसा बाजारों को उ मीद थी। इसने ब्याज दरों में भारी कटौती की। इसका वैश्विक स्तर पर व्यापक असर हो रहा है और शेयर बाजारोंए जो पहले से ही समायोजन कर रहे हैंए को अधिक समायोजन करना पड़ रहा हैए जैसा कि हमने भारतीय बाजार में तेज उछाल के दौरान देखा है। मार्च 2020 के बाद से अमेरिकी केंद्रीय बैंक की ओर से यह पहली ब्याज दर कटौती है। सबसे अधिक ध्यान देने वाली बात यह है कि अमेरिकी फेड ने सभी उ मीदों को पार कर लिया है और पहले से कहीं अधिक कटौती की है . जैसा कि कुछ टिप्पणीकारों ने इसे श्आधा प्रतिशत की भारी कटौतीश् कहा है। इसके परिणाम स्वरूप शेयर बाजार आश्चर्यचकित ढंग से ऊपर की ओर जा रहे हैं। कुछ टिप्पणीकार मौद्रिक नीति निर्माण के इस बड़े कदम को श्फ्रंट लोडिंगश् के रूप में वर्णित कर रहे हैं। ऐसा करते हुएए फेडरल रिजर्व के अध्यक्ष जेरोमपॉवेल ने कहा कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था मजबूत और स्वस्थ है और लगातार बढ़ रही है। साथ हीए ब्याज दरों को ऐतिहासिक उच्च स्तर पर रखने के बावजूदए अर्थव्यवस्था लगातार बढ़ रही है और मंदी में नहीं फंसी है।

साथ हीए कीमतों में तेजी से गिरावट आई है और मूल्य मुद्रास्फीति लगभग लक्ष्य स्तर के भीतर है। उन्हें लगा कि मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने की लड़ाई जीत ली गई है और इसलिए उन्होंने अपनी नीति ब्याज दर में आधे प्रतिशत की कटौती कीए भले ही इसके बारह गवर्नरों में से एक इस धारणा से अलग थे और एक चौथाई प्रतिशत की कम कटौती की वकालत की।

इसका निश्चित रूप से वैश्विक स्तर पर प्रभाव पड़ेगा। प्रमुख देशों के केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व के कदम के जवाब में अपनी ब्याज दरों को फिर से निर्धारित कर सकते हैं। हर तरफदरों में कटौती की उ मीद की जा सकती है।

अमेरिकी फेडरल रिजर्व के फैसले से वैश्विक स्तर पर धन के प्रवाह पर असर पड़ेगा। यह उ मीद करना उचित है कि उभरते बाजारों की अर्थव्यवस्थाओं का लाभ उठाने के लिए फंड मैनेजर इन बाजारों में कुछ अतिरिक्त निवेश करेंगे। भारतीय शेयर बाजार प्रमुख संस्थागत निवेशकों के लिए एक लक्ष्य है और सबसे प्रमुख वैश्विक शेयर सूचकांकों में से एक में भारत का महत्व चीन के मुकाबले मामूली रूप से बढ़ा है।

भारतीय शेयर बाजार में पहले से ही तेजी देखी जा रही है। आज के कारोबार में शेयरों में तेजी आई हैए जबकि ये पहले से ही उच्च स्तर पर हैं। दर समायोजन की स्थिति में शेयरों और बांडों के तुलनीय मूल्य फिर से संरेखित होते हैं। कोई सुरक्षित रूप से उ मीद कर सकता है कि ब्याज दर घटेगी तथा शेयरों की कीमतें बढ़ेंगी। पोर्टफोलियो को फिर से निर्धारित किया जायेगा। अतिरिक्त फंडों में होने वाले उतार.चढ़ाव अगले चरण में विदेशी मुद्रा बाजार को भी हिला सकते हैं। कोई उ मीद कर सकता है कि अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपये के लिए आसान दरें उलट सकती हैं और विदेशी संस्थागत निवेशकों से प्रवाह के अनुसार समायोजन दिखा सकती हैं। फिरए संयुक्त राज्य अमेरिका के केंद्रीय बैंक ने इस समय इतना बड़ा कदम क्यों उठाया है। राय अलग.अलग हैं। आंकड़ों की व्या याएं अलग.अलग हैं। फेडरल बैंक के चेयरमैन पॉवेल ने अमेरिकी अर्थव्यवस्था में विपरीत स्थिति की ओर इशारा किया है। जबकि साल की शुरुआत मेंए कीमतें 4ण्2 प्रतिशत बढ़ रही थीं और बेरोजगारी दर 2 प्रतिशत पर थी। वर्तमान में स्थिति बिल्कुल उलट है। कीमतें 2प्रतिशत बढ़ रही हैं और बेरोजगारी 4ण्2प्रतिशत पर है ।पॉवेल ने बताया कि बेरोजगारी और बढ़ने से पहलेए केंद्रीय बैंक को बेरोजगारी को और बढ़ने से रोकने के लिए समग्र आर्थिक गतिविधि को समर्थन देने की दिशा में कदम उठाना होगा। वास्तव मेंए अर्थशास्त्रियों और बाजार संचालकों में से कुछ लोगों का मानना है कि फेड पहले से ही पीछे रह गया हैए यानी उसने दरों में कटौती को बहुत लंबे समय तक टाल दिया है।

केंद्रीय बैंक ने अपनी नीतिगत दरों को ऐतिहासिक रूप से उच्च स्तर पर बनाये रखा था . सटीक रूप से 23 साल के उच्चतम स्तर पर। परिणामस्वरूपए बाजारों के साथ.साथ अर्थशास्त्रियों को भी उ मीद थी कि फेड इस साल जनवरी में अपनी बैठक में नीतिगत दरों में कटौती करेगाए लेकिन ऐसा नहीं हुआ। फिर मौद्रिक नीति समिति की मार्च की बैठक में कटौती की उ मीद थीए लेकिन ऐसा भी नहीं हुआ। फिरए जून में भी ऐसी ही उ मीद थी। अबए सितंबर में ही कटौती हुई है। पूरे समयए अर्थशास्त्रियों को डर था कि लगातार उच्च ब्याज दरें अमेरिकी अर्थव्यवस्था को मंदी में डाल देंगी। यह डर लंबे समय से था। इकानॉमिस्ट पत्रिका ने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया था कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था अभी भी बढ़ रही हैए हालांकि 2020 की पहली तिमाही से ब्याज दर में लगातार बढ़ोतरी की जा रही थी।

वास्तव मेंए अमेरिकी अर्थव्यवस्था का व्यवहार हैरान करने वाला रहा है। पारंपरिक आर्थिक तर्क के अनुसारए केंद्रीय बैंक ब्याज दरें तब बढ़ाते हैं जब कीमतें बढ़ रही होती हैं। उच्च ब्याज दर मांग को दबा देती हैए निवेश को कम करती हैए जिससे रोजगार में कमी आती है। इस प्रकारए रोजगार और मूल्य वृद्धि के बीच एक विशेष संबंध है।

लेकिन इस बारए फेड ने अपनी ब्याज दरें तब बढ़ाईं जब अमेरिकी कीमतें ऐतिहासिक उच्च गति पर थीं। सभी को बेरोजगारी में वृद्धि और वास्तव में मंदी की उ मीद थी ।परन्तु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ और अमेरिका खुशी.खुशी बढ़ता रहा। साथ हीए हाल ही में कीमतों में तेज वृद्धि धीमी हो गई और केंद्रीय बैंक के स्वीकार्य स्तर पर आ गई।

संभवतरूए यह नयी अर्थव्यवस्था की शुरुआत है। अर्थशास्त्री सुराग खोजने के लिए डेटा और अमेरिकी उपभोक्ताओं के व्यवहार से जूझ रहे हैं। यह महामारी और उसके बाद के दौर में हो सकता है। उपभोक्ताओं के हाथों में अप्रयुक्त धन के बड़े पूल ने अर्थव्यवस्था को चालू रखने में भूमिका निभायी। इस घटना को नियमित रूप से स्वीकार करना बहुत जोखिम भरा हो सकता है।

विविध समाचार

झारखंड में अटल ज़्लीनिक का नाम बदलकर मदर टेरेसा किया, भाजपा ने हेमंत सरकार को घेरा

रांची २२/११ (संवाददाता):झारखंड सरकार द्वारा राज्य में अटल मोहल्ला ज़्लीनिकों का नाम बदलकर मदर टेरेसा एडवांस्ड हेल्थ ज़्लीनिक करने के फैसले पर भारी विवाद छिड़ गया है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने इसे वोट बैंक की राजनीति के लिए किया गया कदम बताया है। राज्य में लगभग 140 अटल मोहल्ला ज़्लीनिक सक्रिय हैं और ये लोगों को मुज़्त प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करते हैं। ये ज़्लीनिक पिछली भाजपा सरकार द्वारा शुरू किए गए थे, और अब झामुमो-कांग्रेस-राजद गठबंधन ने इनका नाम बदल दिया है। मुज़्यमंत्री हेमंत सोरेन की अध्यक्षता में हुई राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में यह फैसला लिया गया।

कैबिनेट सचिव वंदना दादेल ने कहा कि कैबिनेट ने अटल मोहल्ला ज़्लिनिक योजना का नाम बदलकर मदर टेरेसा एडवांस्ड हेल्थ ज़्लिनिक करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। यह योजना पूर्व मुज़्यमंत्री रघुबर दास ने अगस्त 2019 में राज्य की शहरी मलिन बस्तियों में गुणवज़ापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं की कमी को दूर करने के लिए शुरू की थी। भाजपा ने अब झारखंड सरकार के इस फैसले की आलोचना करते हुए इसे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का अपमान बताया है। भाजपा प्रवक्ता अजय शाह ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी झारखंड राज्य के निर्माता थे। राजनीतिक स्वार्थ के लिए उनका नाम हटाना न केवल भारत रत्न का, बल्कि झारखंड की आत्मा का भी अपमान है। राज्य की जनता इसे बर्दाश्त नहीं करेगी।

भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने इस फैसले के लिए कांग्रेस की कड़ी आलोचना की और इसे वोट बैंक के लिए लिया गया फैसला बताया। उन्होंने इसे 卐ध्रुवीकरण का खेल卐 बताया। दुबे ने कहा, 卐अटल ज़्लिनिक अब मदर टेरेसा ज़्लिनिक होगा। कांग्रेस वोट बैंक की राजनीति के लिए धर्मांतरण और ध्रुवीकरण का कौन सा खेल खेल रही है... समझिए कि कल झारखंड में झारखंड को अलग राज्य बनाने वाले माननीय पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर चल रहे अस्पताल का नाम बदलकर एक विदेशी महिला मदर टेरेसा के नाम पर रख दिया गया।卐 बंगलादेशी को देश का वोटर बनाने की मानसिकता का पर्दाफाश हुआ।

सफेद पत्थर के अवैध खनन का रैकेट, दो-ढाई एकड़ की लीज लेकिन पूरे जिले में खुली लूट

जमशेदपुर २२/११ (संवाददाता):पूर्वी सिंहभूम के गुड़ाबांधा प्रखंड में नज़्सलियों का प्रभाव खत्म होते ही सफेद पत्थर ;क्वाट्र्जद्ध के अवैध खनन का धंधा शुरू हो गया। इस रैकेट में झामुमो नेताए पूर्व नज़्सलीए खनन व वन विभाग से लेकर पुलिस और अंचल अधिकारी कार्यालय के कर्मचारी तक शामिल हैं। खुफ्यिा विभाग ने अपनी रिपोर्ट में यह खुलासा किया है। रिपोर्ट के मुताबिक सोनारी के आशीष अग्रवाल ने गुड़ाबांदा के भालकी में 2ण्50 एकड़ और कोकपाड़ा के सुनील नाग ने पत्नी राधिका नाग के नाम पर अर्जुनबेड़ा गांव में 2ण्25 एकड़ जमीन पर क्वाट्र्ज की लीज ली है। वहीं धालभूमगढ़ के राहुल सेनगुप्ता के पास गुड़ाबांधा के शिवपुरा में भंडारण का लाइसेंस हैं। ये तीनों स्थानीय लोगों को मिलाकर अवैध कारोबार कर रहे हैं। रैकेट में हथियापाटा के देवाशीष प्रधानए दीपक प्रधान और भालकी का मोनू मंडल भी शामिल हैं। मोनू मंडल भालकी में पोस्टमास्टर हैं। वहीं पूर्व नज़्सली भुगलू सिंह भी इस धंधे में शामिल हैं। इन सभी को कान्हू सामंत का संरक्षण हासिल है। कान्हू आजसू की टिकट पर दो बार घाटशिला विधानसभा चुनाव लड़ चुके हैं और फ्लिहाल झामुमो में हैं।

स्थानीय व्यापारी एक ट्रैज़्टर पत्थर ;करीब 3 टनद्ध 900 रुपए में खरीदते हैं और बड़े व्यापारी को 2000 रुपए में बेच देते हैं। ये व्यापारी पत्थरों को एक जगह स्टॉक करते हैं। वहां से बड़े व्यापारी को 25 टन क्षमता वाले ट्रक से इसकी सप्लाई होती है। आवंटित लीज के कागजात के आधार पर इन पत्थरों की सप्लाई आदित्यपुर औद्योगिक क्षेत्रए कोलकाताए दुर्गापुर और ओडिशा तक होती है। बड़े व्यापारी 300 रुपए प्रति टन वाला यही पत्थर 5000 रुपए प्रति टन की दर से बेच रहे हैं।

आज का राशिफल

मेष - आज के दिन धार्मिक और आध्यात्मिक प्रवृज़ियाँ विशेष रहेंगी। मन में द्विधा रहने से ठोस निर्णय नहीं ले सकेंगे। पैसे की लेन-देन या आर्थिक व्यवहार न करने की गणेशजी की सलाह है।

वृषभ - गणेशजी कहते हैं कि व्यापार में वृद्धि होने के साथ व्यापार के सज़्बंध में सौदे लाभदायक साबित होंगे। आय के साधनों में वृद्धि होगी। बुजुर्गों तथा मित्र मंडल से लाभ और सुखद क्षणों का अनुभव मिलेगा।

मिथुन - शारीरिक और मानसिक सुख बने रहेंगे। नौकरी - व्यवसाय में आपके परिश्रम का मुआवजा मिलता हुआ प्रतीत होगा। अधिकारी वर्ग के प्रोत्साहन से आपका उत्साह बढ़ेगा। सामाजिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

कर्क - गणेशजी कहते हैं कि आज आपकी भाग्य वृद्धि के साथ आकस्मिक धन लाभ होगा। विदेश जाने के इच्छुक लोगों के प्रयास सफल होंगे। तथा विदेश से अच्छे समाचार आएँगे।

सिंह - आज आपको स्वास्थ्य का ध्यान रखना रहेगा। तबीयत के पीछे धन खर्च होने की संभावना है। निषेधात्मक विचार आपको गलत मार्ग पर न ले जाए, उसका ध्यान रखने के लिए गणेशजी कहते हैं।

कन्या - गणेशजी की कृपा से दांपत्यजीवन के सुखद क्षणों का अनुभव करेंगे। सामाजिक और सार्वजनिक क्षेत्र में आप ज़्याति और प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। मनोरंजन की प्रवृज़ियों में भाग लेंगे। वस्त्राभूषण और वाहन की खरीदी होगी।

तुला - गणेशजी कहते हैं कि सामान्ज रूप से आज स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और बीमार व्यक्ति के भी तबीयत में सुधार होगा। घर में सुख- शांति के वातावरण में आप समय व्यतीत करेंगे। कार्य में सफलता और यश मिलने से उत्साह बढ़ेगा।

वृश्चिक - आज यात्रा प्रवास का आयोजन न करने की सलाह गणेशजी देते हैं। स्वास्थ्य के सज़्बंध में चिंतित रहेंगे। संतानों के सज़्बंध में समस्याएँ खड़ी होंगी। स्वाभिमान भंग न हो इसका ध्यान रखें।

धनु - गणेशजी कहते हैं कि आज आपको अत्यधिक संवेदनशीलता के कारण और घरेलू मामलों को लेकर मानसिक तनाव खड़े होने की संभावना है। मन में उठनेवाली द्विधाओं से आप मानसिक उचाट अनुभव करेंगे।

मकर - आज आप रणनीति में शत्रुओं को परास्त करेंगे। नए कार्यों के आरंभ के लिए तैयार रहें। सफलता मिलेगी। आप हरेक कार्य तन-मन से स्वस्थ रहकर करेंगे। व्यापार-धंधे में लाभ होगा।

कुंभ - गणेशजी बताते हैं कि मन में द्विधाएँ खड़ी होने से आप कोई ठोस निर्णय पर नहीं पहुँच सकेंगे। महज़्वपूर्ण निर्णय न लें। वाणी पर संयम नहीं रहनेसे पारिवारिक सदस्यों के साथ मनमुटाव होने की संभावना है।

मीन - आनंद- उत्साह और तन-मन की प्रसन्नता आपके दिन में चेतना और स्फूर्ति का संचार करेंगे। नए कार्य हाथ में लेंगे तो उसमें सफलता मिलेगी। धार्मिक मांगलिक प्रसंगों में जाएँगे।

अंतरराज्यीय वाहन लूट गिरोह के 4 सदस्य गिरफ्तार, बिहार से जुड़े हैं तार, हथियार और चोरी की गाड़ियां बरामद

पलामू २२/११ (संवाददाता):पलामू पुलिस ने अंतरराज्यीय वाहन लूट गिरोह के 4 सदस्यों को गिरज़्तार किया है। इसमें लातेहार के बरवाडीह का विकास कुमार यादव उर्फ मामाए हैदरनगर के रजौन्धा का छोटन कुमार पासवानएसदर थानाक्षेत्र के पोखराहा खूर्द का नीरज चन्द्रवंशी और विशाल भुइयां शामिल हैं।इनके निशानदेही पर पंडवा थाना क्षेत्र से चोरी की गई बाइकए एक स्कूटीएचैनपुर थाना क्षेत्र से लूट ली गई बोलेरोए एक मोबाइल फोन और एक देशी कट्टा और दो जिंदा कारतूस बरामद हुआ है। लूट के वाहनों को यह गिरोह बिहार ले जाता था। गैंग के सरगना को पकड़ने के लिए छापेमारी की जा रही है।

सदर ैक्व् के विजय शंकर ने बताया कि पिछले साल नवंबर में सदर थाना क्षेत्र में प्रतीक राज उर्फ डीएन का अपहरण फिरौती के लिए किया गया था।

इस कांड के वांटेड अपराधी विकास कुमार यादव उर्फ मामा को सदर थाना क्षेत्र के दूबियाखांड़ मोड़ के पास से मंगलवार को गिरज़्तार किया गया। गिरफ्तारी के वक्त विकास पंडवा थाना क्षेत्र से चोरी की गई स्कूटी पर सवार था। पूछताछ में विकास ने अपहरण के अलावा चैनपुरए पंडवा एसदर थाना क्षेत्र से कई चोरी व लूट की घटनाओं में भी अपनी संलिप्तता स्वीकार की।

अपराधी ने वाहन लूट करने वाले अंतरराज्यीय गिरोह का हिस्सा होने का खुलासा किया। बताया कि इनके तार बिहार से जुड़े हुए हैं। इसके बाद गिरोह के दूसरे सदस्यों की गिरज़्तारी के लिए तीन टीमों का गठन किया गया। छापेमारी के क्रम में सदर थाना व शहर थाना के क्षेत्र से गिरोह के सदस्यों को गिरज़्तार किया गया। छापेमारी दल में चैनपुर थाना प्रभारी उदय कुमार गुप्ताएसदर थाना प्रभारी कमलेश कुमारएपंडवा थाना प्रभारी रूपेश कुमार दूबे सहित कई पुलिसकर्मी शामिल रहे।

फिर से सरकार ही बेचेगी शराब

रांची २२/११ (संवाददाता):झारखंड सरकार ने बुधवार को नई उत्पाद नीति को मंजूरी दे दी। कैबिनेट ने उत्पाद विभाग की चार नीतियों पर मुहर लगाई। इसके मुताबिक थोक शराब का कारोबार निजी हाथों में ही रहेगा। जबकि खुदरा कारोबार झारखंड राज्य विवरेज कॉरपोरेशन लिमिटेड ;जेएसबीसीएलद्ध के माध्यम से होगाए यानी फिर से सरकार ही शराब बेचेगी।

नई नीति एक मई से लागू हो सकती है। सरकार ने वर्तमान नीति को 30 अप्रैल तक बढ़ा दिया है। बैठक के बाद उत्पाद सचिव विनय कुमार चौबे ने बताया कि नीति में बदलाव और राजस्व बढ़ाने के लिए छज़्तीसगढ़ राज्य मार्केटिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड ;सीएसएमसीएलद्ध को कंसल्टेंट नियुक्त किया गया था। उसकी अनुशंसा पर गोदामों की संज़्या घटाई जाएगी।

73 की जगह अब हर प्रमंडल में एक यानी कुल पांच गोदाम होंगे। टेंडर के माध्यम से चयनित पांच थोक व्यवसायी अपनी शराब रखेंगे। ट्रैक एंड ट्रेस सिस्टम भी लागू होगा। उल्लेखनीय है कि रघुवर सरकार के कार्यकाल में 2017 के दौरान शराब की सभी रिटेल दुकानें विवरेज कॉरपोरेशन द्वारा चलाए जाने की नीति बनी थी।

चौबे ने बताया कि दुकानों की संज़्या को भी 750 से बढ़ा कर 1500 किया जा रहा है। साथ ही अगले तीन वर्ष में राजस्व को 3000 करोड़ तक बढ़ाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

देसी शराब की बिक्री नियमावली में भी बदलाव किया गया है। इसके बोतल भी विदेशी शराब की तरह 180 एमएलए 360 एमएल और 750 एमएल की होंगी।

पलामू में वाहन लुटेरे गिरफ्तार, गढ़वा में गड़ेरिया हत्याकांड का खुलासा

पलामू २२/११ (संवाददाता): झारखंड के 2 जिलों की पुलिस को 2 बड़ी सफ्लताएं मिली हैं। मंगलवार को पुलिस के आला अधिकारियों ने इसका खुलासा किया। पलामू पुलिस ने वाहन लूट गिरोह के अपराधियों को पकड़ने में सफ्लता पाई है। 5 लोगों को गिरज़्तार किया गया है। वहीं गढ़वा में चर्चित गड़ेरिया हत्याकांड का खुलासा हो गया है। इसमें दो अपराधी पुलिस के हत्थे चढ़े हैं। पूछताछ में पता चला है कि भेड़ों की लूट के लिए इस घटना को अंजाम दिया गया।

पलामू में गत 25 मार्च को शाम 4 बजे पुरुलिया सीमेंट लेकर पांकी जा रहे ट्रक को 4 अपराधियों ने कारीमाटी घाटी के पास हथियार के बल पर लूट लिया था। ट्रक के चालक को कुछ दूर साथ ले जाने के बाद जंगल में छोड़ दिया गया। इसके बाद अपराधी ट्रक व सीमेंट लेकर फरार हो गए। चालक की शिकायत पर मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई। पुलिस ने लेस्लीगंज थाना अन्तर्गत ग्राम जामुनडीह में एक सीमेंट विक्रेता के गोदाम से चोरी हुए 500 बोरे सीमेंट में 490 बोरा बरामद कर लिया। पुलिस ने इस मामले में घटना को अंजाम देने वाले चार से तीन अपराधियों को गिरज़्तार कर लिया। माल को अवैध रुप से बेचने और खरीदने के आरोप में 2 लोगों को गिरज़्तार किया गया है। इसकी पहचान पांकी डंडार के मानिक शर्मा एमंदीप कुमार रवि उर्फमोनू एलेस्लीगंज के जामुनडीह के अनुज कुमार तिवारीएपांकी के कामत के चंदन कुमार सिंह तथा जामुनडीह के आशीष कुमार चौबे के रूप में की गई है। इनके पास से ट्रकए बाइक और फोन भी बरामद किया गया है।

गढ़वा के कांडी थाना क्षेत्र के गोसांग गांव में गड़ेरिए और भेड़ों की हत्या के मामले का पुलिस ने खुलासा कर दिया है।

इस मामले में उज़र प्रदेश के चित्रकूट जिले के बरगढ़ थाना गांव निवासी यासत खान एवं वासत खान को गिरज़्तार कर लिया है। पुलिस ने उनके पास से घटना में प्रयुक्त दो बांस की लाठीए पल्सर मोटरसाइकिल 3 मोबाइल फोन और एक चाकू बरामद किया है। जानकारी एसडीपीओ अवध कुमार यादव ने दी। उन्होंने बताया कि 22 मार्च को कांडी थाना क्षेत्र के गोसांग गांव में भेड़ चरा रहे मझिआंव थाना क्षेत्र के करकट्टा गांव निवासी सरजू पाल एवं उसके भाई प्रभु पाल को लुटेरों ने पीट कर घायल कर दिया था। उस दौरान सरजू पाल की मौत हो गई थी। भाई प्रभु पाल गंभीर रूप से घायल हो गया था।

वहीं कई भेड़ों को पीट कर मार डाला था। साथ ही सैकड़ों भेड़ों को पिकअप पर लादकर लुटेरों ले गए थे। उक्त घटना में प्राथमिकी दर्ज होने के बाद ैच् के निर्देश पर एक टीम गठित की गई। मामले की छानबीन शुरू की गई। जांच के क्रम में डंडा थाना एवं कांडी थाना अंतर्गत लमारीकला ईंट भट्ठे पर छापेमारी की गई। इसमें वासत खान व यासत खान को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। इन्होंने बताया कि भेड़ों की चोरी के लिए इस वारदात को अंजाम दिया गया। इसमें कई और अपराधी शामिल रहे।

Printed, Published,Edited, & Owned by Prakash Kumar Dhal, Printed at Promodini Publication, Main road , Chhend colony , Rourkela-15 & Published at ECR-73, Chhend Colony, Rourkela-15, Editor : Prakash kumar Dhal, Email:kalingasamachar@gmail.com , Mob: 9439951525, Ph. 0661-2646999

ओडिशा समाचार

कलिंग समाचार राउरकेला, रविवार 23 नवंबर 2025

आरएसपी में सेवानिवृज़ि पूर्व कर्मचारी सशक्तिकरण कार्यशाला रोशनी आयोजित

राउरकेला २२/११ (संवाददाता): राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) के सीपीटीआई में सेवानिवृज़ि पूर्व कर्मचारी सशक्तिकरण कार्यशाला रोशनी आयोजित की गई। उद्घाटन सत्र के मुज़्य अतिथि मुज़्य महाप्रबंधक (यातायात एवं कच्चा माल), श्री कौशिक सुनयानी थे। महाप्रबंधक (एमआरडी), श्री एस.के. भुईयाँ विशिष्ट अतिथि थे। इस सत्र में संयंत्र के 25 कर्मचारियों ने भाग लिया, जिनमें एक कार्यपालक भी शामिल थे, जो की नवंबर 2025 में सेवानिवृज़ हो रहे हैं। रोशनी के सत्रों में एक सुचारू सेवानिवृज़ि पश्चात बदलाव के लिए महत्वपूर्ण विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल थी। सहायक मुज़्य चिकित्सा अधिकारी (चिकित्सा), डॉ. शिवालकर ने अगले सत्र में स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं और सेवानिवृज़ि के बाद स्वस्थ जीवन के लिए रणनीतियों पर चर्चा की। साइबर सुरक्षा से संबंधित मामलों पर उप महाप्रबंधक (सी एंड आईटी), श्री संजय गौतम द्वारा चर्चा की गई, जहां डिजिटल युग में इंटरनेट के लाभों को समझाया गया और प्रतिभागियों को अपनी डिजिटल उपस्थिति की सुरक्षा करने में मदद करने के लिए साइबर दुनिया में खतरों और सुरक्षा की अंतर्दृष्टि प्रदान की गई। विज़ीय सत्र में, उप प्रबंधक (विज़ और लेखा), श्री डी के दाश ने बाद के चरण में स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए सुचारू अंतिम निपटान और प्रभावी विज़ प्रबंधन की प्रक्रियाओं पर चर्चा की। सहायक महाप्रबंधक (विज़ और लेखा), श्री पप्पू कुमार ने विज़ीय सुरक्षा योजना के बारे में बात की। महत्वपूर्ण संक्रमण चरण का सामना करने और एक उद्देश्यपूर्ण और सक्रिय जीवन जीने के लिए, महाप्रबंधक (एसपी-2), श्री वरिंदर एस सहोता ने सकारात्मक मानसिकता की तैयारी पर विचार-विमर्श किया। उप प्रबंधक (नगर सेवाएँ), श्री भरत महंत ने संगठन में क्वार्टर छोड़ने और प्रतिधारण नीतियों पर विस्तार से चर्चा की। सेल मेडिज़्लेम योजना पर सहायक महाप्रबंधक (मानव संसाधन-ईआर एवं सी), सुश्री ज्योति ओड़या ने सज़्बोधित किया। प्रारंभ में, सहायक प्रबंधक (मानव संसाधन-ई.आर. एवं सी), श्री एस.पी. माझी ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया, जबकि सुश्री ज्योति ओड़या ने श्रम निरीक्षक श्री के के परिडा और मानव संसाधन-ई.आर. टीम के साथ कार्यक्रम का समन्वय किया।

रोशनी कार्यशाला का उद्देश्य सेवानिवृज़ कर्मचारियों को सकारात्मकता, उत्साह और तत्परता के साथ सेवानिवृज़ि को अपनाने के लिए व्यापक रूप से तैयार करना है।

सुंदरगढ़ में गजराज का आतंक, फ़सलों का पहुंचा रहे भारी नुकसान

राउरकेला २२/११ (संवाददाता): सुंदरगढ़ जिले के लाठीकटा तथा सबडेगा ज़्लॉक में 81 हाथियों के झुंड ने आतंक मचा रखा है। हाथियों के द्वारा फ़सल को नुकसान पहुंचाने से किसानों की नींद हराम हो गई है। वन विभाग की ओर से इन्हें खदेड़ने का प्रयास किया जा रहा हैए लेकिन सफ़लता नहीं मिल रही है। लाठीकटा ज़्लॉक में 41 हाथियों के होने से बुचा हांडाए डाइटोलाए रेलापोषए बिरुआल क्षेत्र के लोग हाथियों से आतंकित हैं।सबडेगा ज़्लॉक में 40 हाथियों का झुंड है। वन विभाग की ओर से हाथियों पर नजर रखने के साथ ही गांवों की ओर उन्हें आने से रोकने का प्रयास किया जा रहा है। लाठीकटा ज़्लॉक के बीरकेरा पंचायत क्षेत्र में तीन दिन से 41 हाथियों के झुंड देखा जा रहा है। इनके झारखंड के पश्चिम सिंहभूम जिले के जंगल से इस ओर आने का अनुमान लगाया जा रहा है।इस क्षेत्र में पहले से 21 हाथी थे एवं 20 हाथी और इस झुंड में शामिल हो गए। तीन दिन से बिरुआल गांव के पास जंगल में दिन गुजारने के बाद रात होते ही गांवों की ओर रुख कर रहे हैं।हाथियों के द्वारा धान की फ़सल को अधिक नुकसान पहुंचाया जा रहा है। वन विभाग की ओर से हाथियों को खदेड़ने का प्रयास किया जा रहा है पर सफ़लता नहीं मिल रही है। वन विभाग की ओर से ग्रामीणों को टार्च लाइटए पटाखाए मसाल उपलज़्ध कराया जाना चाहिए पर ऐसा नहीं करने से ग्रामीणों में असंतोष है। सबडेगा वन मंडल क्षेत्र में 40 हाथियों का झुंड है। ये हाथी झारखंड के सिमडेगा जिले से ओडिशा में प्रवेश किए हैं। इससे इलाके के लोग आतंकित हैं। सुंदरगढ़ सहायक वनांचल अधिकारी अनिल कुमार पुरोहितए सबडेगा वनांचल अधिकारी अंजना गर्डियाए ज़्लाक उपाध्यक्ष सुशांत बेहराए मनोज पटेल की मौजूदगी में बैठक हुई एवं हाथियों को दूर जंगल में खदेड़ने की रणनीति पर चर्चा की गई।ग्रामीणों के विरोध के चलते इस क्षेत्र से हाथियों को बाहर निकालना वन विभाग के लिए मुश्किल हो रहा हैए जिस क्षेत्र से होकर हाथियों का झुंड गुजरेगा उस क्षेत्र के लोगों को नुकसान होगी। इस कारण लोग हाथियों को अपनेक्षेत्र से होकर जाने से रोक रहे हैं।

वन भूमि पर अवैध निर्माण, एनजीटी ने जारी किया नोटिस

कटक २२/११ (संवाददाता):राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) की कोलकाता स्थित पूर्वी क्षेत्र पीठ ने सोमवार को जाजपुर जिले में वन भूमि पर कथित निर्माण को लेकर राज्य सरकार और अन्य प्राधिकारियों को नोटिस जारी किया।

अधिकरण ने जाजपुर जिले की दानगड़ी तहसील के नुआडीही गाँव निवासी कैलाश चंद्र नायक द्वारा दायर एक याचिका पर सुनवाई करते हुए केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को भी नोटिस जारी किया। याचिकाकर्ता ने दानगड़ी और सुकिंदा ज़्लॉकों में वन भूमि पर अवैध रूप से बड़े पैमाने पर निर्माण परियोजनाओं का आरोप लगाते हुए दावा किया कि इन परियोजनाओं का विज़पोषण जिला खनिज फाउंडेशन (डीएमएफ) कोष द्वारा जाजपुर के जिला कलेज़्टर, जो डीएमएफ के प्रबंध न्यासी भी हैं, की मंजूरी से किया जा रहा है। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता शंकर प्रसाद पाणि और आशुतोष पाढ़ी ने आरोप लगाया कि ये निर्माण कार्य वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 के तहत केंद्र सरकार की पूर्व अनुमति के बिना किए जा रहे हैं। आरोपों पर गौर करते हुए, न्यायमूर्ति बी अमित स्थलेकर (न्यायिक सदस्य) और डॉ. अरुण कुमार वर्मा (विशेषज्ञ सदस्य) की पीठ ने कहा, मामले पर विचार की आवश्यकता है, और राज्य के वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के अतिरिक्त मुज़्य सचिव, जाजपुर के जिला कलेज़्टर, दानगाड़ी और सुकिंदा के बीडीओ, दोनों ज़्लॉकों के तहसीलदारों और कटक के प्रभागीय वन अधिकारी को नोटिस जारी किए। उन्हें चार सप्ताह के भीतर जवाबी हलफनामा दाखिल करने का निर्देश दिया गया है।

मामले की अगली सुनवाई 25 अगस्त को होगी। याचिका के अनुसार, 21 नवंबर, 2023 को कलेज़्टर ने सुकिंदा के बीडीओ को 13.20 करोड़ रुपये की लागत से 132 प्राथमिक विद्यालयों में गतिविधि कक्षों के निर्माण के लिए एक पत्र जारी किया था। बाद में, 24 जनवरी, 2024 को, कलेज़्टर ने दानागड़ी ज़्लॉक के 140 स्कूलों में अतिरिक्त कक्षाओं के लिए 13.10 करोड़ रुपये और गतिविधि कक्षों के लिए 14 करोड़ रुपये स्वीकृत किए।

याचिका में दावा किया गया है कि वन भूमि के रूप में दर्ज भूमि पर बड़े-बड़े कंक्रीट के ढांचे बनाए जा रहे हैं, जो राजस्व विभाग द्वारा 2011 में दिए गए स्पष्टीकरण के अनुसार, वन संरक्षण अधिनियम के दायरे में आता है। याचिका में वन भूमि पर गैर-वन गतिविधियों को मंजूरी मिलने तक रोकने के लिए तत्काल हस्तक्षेप की मांग की गई है और निर्माणों को अवैध घोषित करने की मांग की गई है।

शराब के नशे में मां-बाप ने 6 महीने के बच्चे की ले ली जान

कटक २२/११ (संवाददाता): ओडिशा के कटक में चौद्वार थाना व्याघ्रवाहिनी मैदान के पास मौजूद आदिवासी बस्ती में एक दुखद घटना घटी है। शराब के नशे में धुत होकर मां.बाप ने अपने 6 महीने के बेटे को मार डाला। इसके बादए उसे सुनसान जगह पर दफ्ना दिया।

थाने में मिली शिकायत के बाद चौद्वार थाना की पुलिस मौके पर पहुंची। उन्होंने लाश को बरामद किया। अब पुलिस ने घटना की छानबीन में शुरू कर दी है। मिली जानकारी के अनुसारए सोमवार को आदिवासी बस्ती के राजू हेंब्रम और संभारी हेंब्रम अपने तीन दोस्तों के साथ घर के अंदर बैठकर देर रात तक शराब पी रहे थे। अधिक नशा होने के बाद दोनों वहां सोये हुए 6 महीने के बच्चे के ऊपर चढ़ गएए इसके बारे में दोनों को उस वक्त पता नहीं चलाए लेकिन मंगलवार की सुबह जब नशा उतरा तो दोनों ने अपने बेटे को मृत पाया। ऐसे में पति.पत्नी ने हड़बड़ी में आकर बच्चे की लाश को एक सुनसान जगह पर ले जाकर मिट्टी खोदकर उसे दफ्न कर दिया। इस संबंध में पड़ोस के लोग और कुछ युवाओं को जानकारी मिली। उन्होंने तुरंत चौद्वार थाना को इस बारे में खबर दी। थाना अधिकारी विश्व रंजन साहू ने मौके पर पहुंचने के बाद साइंटिफिक्र टीम को बुलाया।

रेलवे परियोजना के लिए भूमि मुआवजे का वितरण शुरू

मलकानगिरी २२/११ (संवाददाता): बहुप्रतीक्षित 128 किलोमीटर लंबी जयपुर-मलकानगिरी रेलवे परियोजना ने मथिली पंचायत में भूमि अधिग्रहण के लिए 39 लोगों को 2.45 करोड़ रुपये वितरित किए जाने के साथ गति पकड़ ली, जिसमें खैरपुट ज़्लॉक के चार लोग शामिल हैं। नबरंगपुर के सांसद बलभद्र माझी ने मलकानगिरी के विधायक नरसिंह मदकामी और कलेज़्टर आशीष ईश्वर पाटिल की मौजूदगी में मुआवजा वितरित किया। लाभार्थियों को मुआवजे के तौर पर प्रति एकड़ 10 लाख रुपये मिले।

माझी ने कहा कि 108 किलोमीटर लंबी यह परियोजना मलकानगिरी जिले में 80 किलोमीटर तक फैली है, जिससे 42 गांव प्रभावित होंगे - मथिली में 15, मलकानगिरी में 14 और खैरपुट ज़्लॉक में 13। उन्होंने कहा, इस परियोजना के लिए कुल 1,946 एकड़ भूमि का अधिग्रहण किया जाएगा, जिसमें से 714 एकड़ निजी भूमि और 231 एकड़ सरकारी भूमि है। इस साल दिसंबर तक भूमि अधिग्रहण की पूरी प्रक्रिया पूरी हो जाने के बाद, जनवरी 2026 तक परियोजना का काम शुरू होने की संभावना है। जिले भर के 844 लाभार्थियों को मुआवज़ा देने के लिए कुल 476 करोड़ रुपये की आवश्यकता होगी। जबकि इस परियोजना को 2016 में मंजूरी दी गई थी और 2018 में डीपीआर को मंजूरी दी गई थी, 2019-2024 तक प्रगति रुकी हुई थी। उन्होंने कहा कि पिछले साल डबल इंजन सरकार के सज़ा में आने के बाद ही भूमि अधिग्रहण में तेजी आई। टीएनआईई से बात करते हुए, कलेज़्टर पाटिल ने कहा, रेलवे ने परियोजना के कारण प्रभावित जिले भर के 844 लाभार्थियों को मुआवज़ा देने के लिए जिला प्रशासन के पास 150 करोड़ रुपये जमा किए हैं। संवितरण छह महीने के भीतर पूरा हो जाएगा और 1,000 एकड़ वन भूमि के लिए प्रतिपूरक वनीकरण अंतिम चरण में है।

भुवनेश्वर में स्कूटी चोरी का सीसीटीवी फुटेज सामने आया

भरतपुर २२/११ (संवाददाता): ओडिशा के भुवनेश्वर के भरतपुर इलाके में दो दिन पहले हुई स्कूटी चोरी का सीसीटीवी फुटेज सामने आया है। फुटेज में साफ तौर पर दो चोरों को स्कूटी ले जाते हुए देखा जा सकता है। भरतपुर इलाके के निवासियों ने शिकायत की है कि पिछले कुछ दिनों में भरतपुर पुलिस थाने के ठीक पीछे दिनदहाड़े कई चोरियाँ हो चुकी हैं, लेकिन पुलिस ने अभी तक चोरी रोकने के लिए कोई कार्रवाई नहीं की है। दो दिन पहले, दो युवक फूल तोड़ने के बहाने कॉलोनी में घुसे और संजीव प्रधान की स्कूटी चुरा ले गए। इस चोरी का सीसीटीवी फुटेज कैद हो गया है। स्थानीय लोगों द्वारा सीसीटीवी फुटेज के साथ भरतपुर पुलिस थाने में शिकायत दर्ज कराने के बाद भी कोई नतीजा नहीं निकला। लोगों की शिकायतों के अलावा, भरतपुर बस्ती के कुछ नशेड़ी असामाजिक तत्व नशे की लत के लिए कॉलोनी में हर दिन अलग-अलग जगहों से चोरी कर रहे हैं, निवासियों ने शिकायत की है। उन्होंने आगे शिकायत में कहा कि बीएमसी की लापरवाही के कारण कॉलोनी की लगभग सभी स्ट्रीट लाइटें खराब हैं, जिसका फायदा स्थानीय असामाजिक तत्व उठा रहे हैं। भरतपुर जी ए कॉलोनी में ज़्यादातर सेवानिवृज़ हो चुके वरिष्ठ नागरिक रहते हैं, जो अब खुद को असुरक्षित महसूस करते हैं। उन्होंने शिकायत की है कि अगर हमारे घर के पास पुलिस स्टेशन होने के बावजूद हम सुरक्षित नहीं हैं, तो दूसरों की ज़्या हालत होगी, यह साफ़ ज़ाहिर है।

आरएसपी और कारखाना एवं बॉयलर निदेशालय द्वारा संयुक्त रूप से ऊंचाई पर कार्य पर सुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

राउरकेला २२/११ (संवाददाता): कारखाना एवं बॉयलर निदेशालय और सेल, राउरकेला इस्पात संयंत्र द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित ऊंचाई पर कार्य पर सुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

सेल, राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) के सहयोग से कारखाना एवं बॉयलर निदेशालय, ओडिशा सरकार, राउरकेला मंडल द्वारा सीपीटीआई सभागार में शून्य गिरावट क्षेत्र- ऊँचाई पर कार्य और छत की शीटिंग के दौरान सुरक्षा शीर्षक से %ऊँचाई पर कार्य% पर एक सुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन आरएसपी के कार्यपालक निदेशक (वर्क्स), श्री बिस्वरंजन पलाई ने किया। मुज़्य महाप्रबंधक (सुरक्षा एवं अग्निशमन सेवाएँ), श्री हीरालाल महापात्रा, उप निदेशक, कारखाना एवं बॉयलर, राउरकेला मंडल, ओडिशा सरकार, श्री बिभु प्रसाद, सहायक निदेशक, कारखाना एवं बॉयलर, राउरकेला क्षेत्र-ढ्ढ एवं ढ्ढढ्ढ, ओडिशा सरकार, श्री स्वराज कुमार त्रिपाठी भी मंच पर उपस्थित थे। अपने उद्घाटन भाषण में, श्री पलाई ने शून्य दुर्घटना कार्य संस्कृति सुनिश्चित करने के लिए, विशेष रूप से ऊँचाई पर कार्य करते समय, सुरक्षा प्रथाओं का पालन करने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने इस संयुक्त पहल की सराहना की जिसका उद्देश्य कार्यबल और पर्यवेक्षी कर्मियों के बीच जागरूकता और तकनीकी ज्ञान को बढ़ाना है।श्री बिभु प्रसाद ने कार्यक्रम के परिप्रेक्ष्य पर विचार-विमर्श करते हुए, ऊँचाई पर कार्य करने से जुड़ी वैधानिक आवश्यकताओं, जोखिम कारकों और निवारक उपायों पर प्रकाश डाला। उन्होंने गिरने से संबंधित घटनाओं को रोकने के लिए नियमित प्रशिक्षण और उचित सुरक्षात्मक उपकरणों के उपयोग की आवश्यकता पर भी बल दिया।

प्रारंभ में, श्री स्वराज कुमार त्रिपाठी ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया। श्री हीरालाल महापात्र ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में निवारक उपायों, नियामक दिशानिर्देशों और गिरने से सुरक्षा, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई) के उपयोग, और ऊँचाई पर छत की शीटिंग और रखरखाव कार्य के दौरान सुरक्षित प्रथाओं से संबंधित व्यावहारिक प्रदर्शनों पर ध्यान केंद्रित किया गया।